Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

दीन बन्धु सर छोटूराम

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 23 अंक 01 30 जनवरी, 2023 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

दीन के बंधु चौ0 छोटूराम

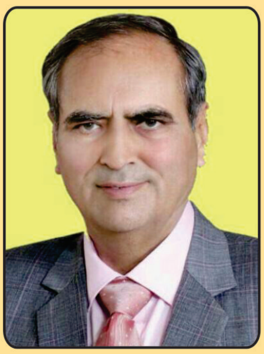
डा. महेन्द्र सिंह मलिक

दीन बंधु सर छोटूराम ने भूमि को जननी मानकर किसान के शोषण के मद्देनजर कहा था "जिस खेत से म्यंसर ना हो दो जून की रोटी, उस खेत के गोसाए गंदम को जला दो"। दीन बंधु सर छोटूराम ऐसी ही प्रतिभा थे जो एक ही वक्त में भगत भी, शूर भी और दाता भी थे। खुद का जीवन कभी आसान ना था लेकिन बिना किसी जाति–पाति और धर्म के प्रतिभा पर सब न्यौछावर था। उनका जन्म एक मध्यम वर्गीय गढ़ी सांपला के चौधरी सुखीराम के घर 24 नवंबर 1881 को हुआ लेकिन कृषक समाज के मसीहा ने इसे किसान की इच्छाओं आकांक्षाओं से जोडकर बसंत पंचमी के दिन मनाने का आह्वान किया। इस दिन सरसों की फसल के फूलों की तरह किसान का तन मन भी खिल उठता है। यही उनके किसान मजदूर वर्ग के प्रति गहरे लगाव को जाहिर करता है।

सर छोटू राम का सफर इतना आसान नहीं था। एक मध्यम किसान परिवार में जन्मे बच्चे के दिल में एक साहूकार से पिता को बे–इज्जत होते देख जो भावना पैदा हुई वह प्रतिशोध नहीं कुछ कर गुजरने की ललक थी। वह छोटा सा हादसा ही उनका पथ प्रदर्शक बन गया और काश्तकार–गरीब वर्ग के मसीहा बनकर उभरे। अपनी सख्त मेहनत और बुद्धि की बदौलत सैंट स्टीफन कालेज दिल्ली से स्नात्तक की डिग्री हासिल की। संपूर्ण विद्यार्थी जीवन स्नात्तक और कानून स्नात्तक तक की डिग्री सदा प्रथम श्रेणी में हासिल कर वजीफे पर ही पूर्ण की जो उनकी बौद्धिकता का प्रतीक और प्रमाणिक है।

सर छोटू राम ने देश को सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार, भाई–भतीजावाद जैसी कुरीतयों से निजात दिलाने के लिए और करोड़ों किसान, मजदरों को आर्थिक शोषण से मुक्ति दिलाने के लिए वकालत का पेशा छोड़ राजनीति को अपना लिया। वे वर्ष 1916 में रोहतक जिले के कांग्रेस अध्यक्ष बने लेकिन केवल चार वर्षों बाद ही 1920 में कांग्रेस के असहयोग आंदोलन से अपनी असहमति जताते हुए जिला कांग्रेस अध्यक्ष पद त्याग दिया। वर्ष 1923 में सर फजले हुसैन के साथ मिलकर नैशनल युनियनिष्ट पार्टी का गठन किया। यह पार्टी किसान, मजदूर और काश्तकारों के हितों की रक्षा हेतू बनाई गई।

दीनबंधु की राजनैतिक यात्रा भी अनूठी थी। वे सन 1923 में पहली बार रोहतक (दक्षिण–पूर्वी ग्रामीण क्षेत्र) से पंजाब विधानपरिषद के सदस्य बने और राजनीतिक पारी शुरू की। सन 1924 में उनको चौधरी लालचंद के स्थान पर पंजाब मंत्रीमंडल में शामिल किया गया जो उनके महापुरूष बनने की दिशा में प्रथम कदम था। पंजाब विधान सभा में गैर–कृषक सदस्यों के कड़े विरोध के बावजूद उन्होंने किसान समुदाय के हित को आगे बढ़ाना शुरू कर दिया था और यहीं से उनकी राजनीतिक प्रतिभा और सूझबूझ का चारों और सिक्का चलने लगा था। यहीं से चौ० छोटूराम का भविष्य निर्माण हुआ। उनका मुख्य लक्ष्य पंजाब के किसान को ऋणदाता के चंगुल से मुक्ति दिलाना था।

यही उनका जीवन प्रयंत ध्येय और लक्ष्य रहा। इसी वर्ष वे पंजाब विधान सभा का चुनाव जीतने पर कृषि मंत्री बने और 26 दिसंबर 1926 तक इसी पद की गरिमा को बढ़ाते हुए किसान हित के कई बिल पारित करवाए जैसा 'पंजाब कर्जा राहत अधिनियम 1934' इस अधिनियम का प्रावधान है कि अगर किसान ऋण दाता ने अपने ऋण से दोगुनी राशी अदा कर दी है तो ऋण स्वतः ही खत्म हो जायेगा। पंजाब कर्जदार सुरक्षा अधिनियम 1936 के अनुसार कर्जदार के वारिसों की भूमि हस्तांतरण पर रोक लगी तथा खड़ी फसल, वृक्षों को बेचने व कुर्की करने पर रोक लग गई। पंजाब राजस्व अधिनियम 1928, पंजाब कर्जदाता पंजीकरण अधिनियम 1938 तथा रहनशुदा जमीनों की बहाली अधिनियम 1938 भी पारित करवाए। रहनशुदा जमीनी बिल का प्रावधान था कि 20 वर्ष पूर्ण होने पर किसान की भूमि स्वत रहन मुक्त हो जाती थी। इन विधेयकों का प्रभावी क्रियान्वयन पीड़ित किसान वर्ग के लिए वरदान साबित हुआ। इनमें यह भी प्रावधान था कि किसान के मूलभूत कृषि यंत्र, साधन, बैल, हल इत्यादि की किसी भी हालत में कुर्की नहीं हो सकती थी।

आधुनिक भारत के विकास मंदिर के नाम से जाने वाले भाखड़ा बांध की रूप रेखा सर छोटू राम ने बना दी थी। वर्ष 1933 में पंजाब लैजिस्लेटिव कांऊसिल के प्रस्ताव के अनुसार इस परियोजना की काफी हद तक बाधाएं पार करवा दी तथा वे इसे मूर्त रूप देने में जीवन प्रयंत प्रयासरत रहे। कृषि जगत में हरित क्रांति का बीज अंकुरित करने के लिए लाहौर में एक दिन समारोह के दौरान उन्होने अपना जन्मदिवस बंसत पंचमी को मनाने के लिए कहा था

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

क्योंकि उनका मानना था कि बसंत पंचमी किसान– काश्तकार का पर्व है और प्रकृति व कृषक समाज युग–युगांतर से एक दूसरे के पर्यायवाची हैं।

अपनी मेहनत और सरकार के थोड़े से सहारे के साथ किसान ने हरित क्रांति को फलीभूत कर दिया लेकिन उसके घर में लक्ष्मी (धन) या सरस्वती (शिक्षा) दोनों का ही अभाव है। आजादी के बाद विकास का जो मॉडल अपनाया गया उसकी सफलता और विफलता पर बौद्धिक बहस शुरू हो चुकी है। आज भारत की कुल आर्थिकता का 70 प्रतिशत करीब 48000 अरब रूपये की संपत्ति केवल 8200 बड़े अमीर घरानों के पास है और करीब 23 करोड़ की आबादी के पास केवल 30 प्रतिशत जो स्पष्ट करता है कि आर्थिक व्यवस्था चंद घरानों के पास गिरवी पड़ी है। सर छोटू राम ने किसान–मजदूर वर्ग को राहत देने के लिए कानून बनवाए थे लेकिन आज किसान पर रजिस्ट्री कानून 1882, भूमि अधिग्रहण कानून 1894 तथा भू–उपयोग वर्गीकरण कानून 1950 की भारी मार पड़ रही है।

संयुक्त पंजाब में किसानों की आर्थिक मुक्ति हेतू छोटूराम ने बहुत संघर्ष किया उसमें उनको पूर्ण विजय प्राप्त हुई। पंजाब के इतिहास में अन्य कोई ऐसा आंदोलन नहीं चला जिसमें हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आदि विभिन्न मतों को मानने वाले लोगों को इतनी बड़ी संख्या में संघर्षरत कर दिया। छोटूराम बेजुबान किसान की मजबूत व प्रभावशाली आवाज बने। सन् 1937 के पंजाब विधानसभा के चुनाव में 175 में से 102 सीटें जीतने पर इन्हे सर की उपाधि से सम्मानित किया गया व जिन्नाह की पार्टी को मात्र 2 सीटें मिली थी। ऐसी महान विभूति को किसी एक जाति समुदाय से जोड़ा नहीं जा सकता। दीन बंधु अपने जीवन की अंतिम यात्रा तक कामगार, काश्तकार व किसानों के दुखों में गमगीन रहते हुए हमेशा इन कौम के दुखड़े को यह कहकर उजागर करते रहे – इस कौम का इलाही दुखड़ा किसे सुनाऊं, डर है कि इसके गम में घुट–घुट के मर ना जाऊं।

सर छोटू राम हिंदू–मुस्लिम एकता के पक्षधर थे। मुस्लिम लीग पंजाब में युनिनिस्ट पार्टी को खत्म करने के लिए प्रयास करती रही और देश विरोधी ताकतों को मजहब के नाम पर बांटने की कोशिश करती रही। वर्ष 1944 में उन्होने मुस्लिम बाहुल क्षेत्र लायलपुर अब फैसलाबाद में मुल्लाओं और डिप्टी कमीश्नर के विरोध के बावजूद एक बड़ी रैली करने में सफलता हासिल की। सर छोटू राम उस वक्त तो इसे टाल गए लेकिन राष्ट्र विरोधी ताकते एक अलग इस्लामिक देश – पाकिस्तान के गठन में कामयाब हो गई और राष्ट्र का विभाजन 1947 में हो गया। राष्ट्रभक्तों का मानना है कि अगर सर छोटू राम जिंदा रहता तो राष्ट्र का बंटवारा न होता। चौधरी साहब बहुत ही स्पष्ट शब्दों में कहते थे ''हम मौत पंसद करते हैं, विभाजन नहीं।'' वे मजहब के नाम पर बने इस इस्लामिक राज्य पाकिस्तान को बंगाल व पंजाब के हिंदूओं तथा सिक्खों के लिए अत्याचार का क्षेत्र समझते थे जिसका असली स्वरूप आज सारे राष्ट्र को नुकसान पहुंचा रहा है।

चौ. छोटू राम किसान के बेटे की शिक्षा के साथ–साथ स्त्री शिक्षा के सदैव पक्षधर रहे। उन्होंने जाट गजटीयर पत्रिका का प्रकाशन कर किसान मजदूर वर्ग के लिए शिक्षा का अभियान चलाया तथा शिक्षा के प्रसार के लिए गुरूकुल और जाट शिक्षण संस्थाओं की स्थापना करवाई। उनसे सहायता प्राप्त शिक्षा प्राप्त करने वालों में भूतपूर्व केंद्रीय मंत्री चौ० चांद राम और पाकिस्तान के एकमात्र नोबेल पुरूस्कार विजेता अब्दुस सलाम उल्लेखनीय हैं। नोबेल पुरूस्कार जीतने पर अब्दुस सलाम ने कहा था कि "अगर सर छोटूराम ना होते तो अब्दुस सलाम इस मुकाम पर ना होते।" उनका मानना था कि किसान की दशा दिशा सुधारने में किसान के बच्चों के लिए शिक्षा के साथ–साथ रोजगार नितांत जरूरी था क्योंकि कृषि उस वक्त में लाभप्रद पेशा नहीं था। आज किसान के हालात बद से बदतर हो गए हैं।

चौ० छोटूराम का जीवन उड़ते बालू–कण और पतझड़, शोषण और पीड़ा से ग्रस्त कृषक समाज के उद्धारक के रूप में ही गुजरा क्योंकि उन्होने स्वंय यह सब कुछ भोगा तथा महसूस किया था। वे हमेशा कहते थे "नहीं चाहिए मुझे ये मखमल के मरमरे, मेरे लिए तो मिट्टी का हरम बनवा दो।" चौ० छोटूराम सदी की रक्तहीन क्रांति के सुत्रधार बने जिसके द्वारा उन्होने शोषित किसान को सेठ–साहूकारों के चुंगल से छुड़ाया। दीन बंधु सर छोटू राम महिला विकास, सुरक्षा के साथ–साथ उनकी शिक्षा व सम्मान के सदैव पक्षधर रहे। एक बार रोहतक के पास खाप पंचायतों ने मिलकर आग्रह किया कि आपके सुपत्र नहीं है इसलिए आप दूसरी शादी करवा लो तो उन्होंने उनको लताड़ते हुए कहा कि जब समस्त भारत के नर–नारी सुपत्र–सुपुत्रियां तो दूसरी शादी क्यों करवांऊ।

दीन बंधु सर छोटूराम ने अपने जीवन काल में ही

बढ़ रहे प्रदूषण पर आशंका जताई थी तथा वातावरण संरक्षण हेतू सरकार को चेताया था। उन्होने उद्यमकर्ताओं को आह्वान किया था कि वे सरकार से मिलकर वातावरण संरक्षण की योजना बनाएं। जनता को भी जागरूक करने पर उन्होंने किसानों के खेत को तीन भागों में बांटने को कहा था कि एक भाग में खेती, चारों ओर वृक्षों तथा तीसरे हिस्से में पशुपालन रखने से वातावरण का संरक्षण भी होगा तथा पोषित विकास संभव होगा। वे सादा खाते, सादा पहनते थे ताकि जनता उनका अनुशरण कर निरोगी जीवन व्यतीत कर सके।

सर छोटूराम की चौमुखी प्रतिभा को हमें आज के संदर्भ में देखना–समझना है। जब तक उनकी विचारधारा युवा वर्ग में पूर्णतया जागृत नहीं होगी तब तक उनकी ग्रामीण क्रांति या महात्मा गांधी का पूर्ण स्वराज भारत में नहीं आ सकता। लेखक ने कई बार वर्तमान पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ जो कि उस समय लाहौर में स्थित था, के अंदर सर छोटूराम चेयर स्थापित करने के लिए प्रदेश सरकार व प्रशासन को पत्र लिखे हैं ताकि किसानी पर आधुनिक तकनीक के शोध हों जो किसानों की दशा सुधारने में कारगर हो सकें लेकिन अभी तक इस विषय में कुछ नहीं किया गया है।

पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ को लिखे गये पत्र का प्रारूप निम्न प्रकार से हैः–

आज दीन बंधु सर छोटू राम द्वारा किसान, मजदूर वर्ग के उत्थान के लिए किए गए कार्यों को तीव्र गति से चलाए जाने की आवश्यकता है ताकि ग्राम स्वराज का लक्ष्य पूरा हो सके। महान व्यक्ति अपने समय के युग पर्वत्तक होते हैं जो कि आगामी युगों की आधारशिला रखते हैं। दीनबंधु ऐसे ही युग पुरूष थे जिन्होने हरित क्रांति का सुत्रपात कर आधुनिक चेतना के सुत्रधार बने। किसान की दुर्दशा और बर्बादी को रोकने के लिए सुखे, बाढ, बीमारी के बचाव हेतू केंद्र सरकार द्वारा किसान राष्ट्रीय सुरक्षा कोष स्थापित करने की आवश्यकता है। सर छोटू राम ने एक किसान कोष स्थापित किया था उसी का दायरा बढ़ाकर सर छोटू राम को सच्ची श्रद्धांजली दी जा सकती है। इस कोष से किसान–मजदूर और मजलूम को हर संभव मुश्किल झेलने में मदद देने के प्रावधान किए जाएं तथा किसान के हित में राष्ट्रीय स्तर पर आवाज उठाने हेतू किसान सुरक्षा संगठन की स्थापना की जानी चाहिए। इसके साथ–साथ आज कृषक–मजदूर वर्ग को सही दिशा दिखाने, शिक्षित करने, इनके उत्थान के लिए नई तजवीज व प्रगतीशील योजनाएं बनाकर उनको प्रभावी ढंग से लागू करने तथा देश में धर्म निरपेक्षता, अखंडता व प्रभुसत्ता सम्पन्नता को कायम रखने के लिए फिर से एक दीन बंधु सर छोटू राम की आवश्यकता है ताकि ग्रामीण समाज, किसान कृषक–मजदूर वर्ग के विकास का उनका स्वपन साकार हो सके। इसी प्रकार किसान की भूमि अधिग्रहण की नीति पर पुनर्विचार किए जाने की आवश्यकता है ताकि कृषि भूमि पर आधारित समस्त ग्रामीण समाज की दयनीय हो रही आर्थिक स्थिति को सुधारा जा सके।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

लघुकथा

आपणे की चोट

– राजकिशन नैन

एक सुनार था। उसकी दुकान के धौरे एक लुहार की दकान बी थी। सुनार जिब काम करदा, तै उसकी दुकान म्हं कती कम खुड़का हुंदा, पर जिब लुहार काम करदा तै उसकी दुकान म्हं तैं कानां के परदे फोड़ण आळी आवाज सुणाई पड़दी।

एक दिन सोने का नान्हा–सा भौरा उछळ कै लुहार की दुकान मैं जा पड़्या। उड़ै उसकी सेठ–फेट लोह के एक भोरे गेल्यां हुई।

सोने का दाणा लोह के दाणे तैं बोल्या, 'भाई म्हारा दोनुआं का दुःख बराबर सै। हाम दोनूं एक–ए–ढाल आग में तपाये जां सै अर एक सार चोट हामने ओटणी पड़ै सै। मैं सारी तकलीफ बोल–बाला ओट ल्यूं सूं, पर तूं?'

"तू सोलह आने सही सै। पर तेरे पै चोट करण आळा लोहे का हथोड़ा तेरा सगा भाई नहीं सै, अर मेरा ओ सगा भाई सै।" लोह के दाणे ने दुःख में भर के जवाब दिया। फेर कुछ रुक कै बोल्या 'परायां की बजाय आपणां की चोट का दर्द घणा होया करै।'

AGRICULTURE CRISIS IN THE COUNTRY

- JUSTICE PRITAM PAL
FORMER JUDGE, PUNJAB AND HARYANA HIGH COURT

Let us start with some facts. Agriculture in India contributes significantly to gross domestic product (GDP). It is a fact that in the situation of food security, rural employment and environmental techniques like soil conservation, management of natural resources, sustainable agriculture are essential for the development of the entire rural area. No doubts, for overall rural development, the Indian agricultural sector has been a symbol of the Green Revolution, Yellow Revolution, White Revolution and Blue Revolution. The agriculture sector contributes nearly 15 percent of India's $2.9 trillion economy but employs about half of the country's 1.3 billion people.

Now some more facts revealing the stark reality. The condition of most farmers is terrible. About 80% of farmers in India are marginal (less than 1 hectare) or small farmers (1-2 hectare) category. Agriculture supports about 60% of employment but contributes only 17% to GDP. Every day. there are reports of Indian farmer suicides from different parts of the country. According to the NCRB report data, the number of farmer suicides in the country was 11,379 in 2016 as against 12,360 in 2014 and 12,602 in 2015. For decades, farmers found themselves driven deeper into debt by crop failures and the inability to secure competitive prices for their produce. Finding themselves unable to cope, many have resorted to taking their own lives. From the data collected by me from various quarters it can be very safely interred that the numbers of suicides by the farmers as well as the number of debt ridden farmers is overall on the rice, which is very unfortunate for the country which is known as Krishi Pradhan Desh'.

Lately, the Central Government promulgated three Acts: (I) the Farmers' Produce Trade and Commerce (Promotion and Facilitation) Act, 2020, (ii) the Farmers (Empowerment and Protection) Agreement on Price Assurance and Farm Services Act, 2020, and (iii) the Essential Commodities (Amendment) Act, 2020.6,7,8 The Acts collectively seek to (i) facilitate barrier-free trade of farmers' produce outside the markets notified under the various state APMC laws, (ii) define a framework for contract farming, and (iii) impose stock limits on agricultural produce only if there is a sharp increase in retail prices.

The three Acts as projected, aim to increase opportunities for farmers to enter long term sale contracts, increase availability of buyers, and permits buyers to purchase farm produce in bulk. The bills further state that farmers can come into an agreement with private companies. It feels that such deals are financially attractive but because there are so many terms and conditions attached, it is difficult for a farmer to cope with them. Issue with the Acts enacted by the Government is a matter of concern. There is a feeling that Government has left the farmers at the mercy of big corporations. It is preposterous to believe that farmers who have small land-holdings will have any bargaining power over private players.

Though the Government officials have said that farmers can sell their produce to whoever they want, whenever they want. It is a matter of concern that how can a small farmer store his produce for months on end? He will not have access to storage facilities. As a result, it is very likely that the produce will be sold at a rate which is unsustainable for the farmer.

It needs to be understood that what they need is assured price. If the markets are saying they will provide higher price to farmers, the question is higher price to what. There must be some benchmark. Agriculture is suffering from a depressed pricing over the cecades. Farmers have been denied the rightful income over the Agriculture has been deliberately kept improvised.

The reformation and expansion of the network, of APNIC mandis in the country is the need of the hour, Provide MSP to farmers and make it legally binding that there will be no trading below the MSP. Make it punishable if someone tries to play with it. That is the only way to safeguard the rights of the farmers. The implications of these bids are going to be adverse because farmers actually need protection of their interests in the form of regulations. There is a feeling among farmers that the Government's step to de-regulate in the hope that private players will do what the Government ought to be doing itself is not going to help farmers.

The overall reading is that there are serious deficiencies in the way the bills have been drafted. Clearly, it's meant for the agri-business companies and not the farmers. While the Government more or less openly says that it's meant for investors, it obviously has not done enough to ensure that farmers' interests 3-e not sacrificed. To sum up, the problem with the bills is that he are putting the farmers into the hands of the private players without any safeguards and without any regulations or discipline in terms of price setting. There is a lack of regulatory oversight and price-setting body.

The existing system of Minimum Support Price (MSP) just needs to be strengthened and it will pave the way for well-being of the farmers. The MSP is like a Government security net for farmers against bullying by middlemen and a steep decline in prices of farm produce. The MSP is set twice a year by the Government for a set of 22 crops. It is set by the Commission for Agricultural Costs & Prices (CACP) and is the rate at which Government guarantees to buy crops from farmers via different agencies. The biggest worry stems from the fact that only six per cent of the country's farmers have been able to sell their prices at MSP. That leaves 94 per cent of farmers who are forced to sell their produce at prices lower than the minimum price determined by the Government.

Now, there is an apprehension that the Government will eventually dismantle the state procurement system and the MSP transaction which the farmers depend on. Despite the imperfect reputation of the outmoded APMC structure, several farmers in the country feel that the mandi mechanism offers them some sort of price guarantee in comparison to states that have abolished the Agriculture Produce Marketing Committee Act.

Bihar is the biggest example. The state was the first one to abolish the act over a decade ago, enabling private players to directly procure from farmers. But the results have been far from what the Government intended. In the state. commission agents have been replaced by a clout of traders who now control the prices.

An account of protesting farmers show they are concerned that the MSP mechanism will cease to exist if corporates control prices in the absence of APMCs. In such a scenario, poorer farmers in the country with less landholding will be impacted. So the biggest issues pointed out by farmers is the fact that the b Is exclude a price guarantee mechanism like MSP. The Government says there will be an MSP, but can it assure whether procurement will be done at MSP. Can it give a written assurance that farmers will get MSP for their produce? Can it be made punishable in case mandate is not followed? Can the Government guarantee MSP in form of rebates signifying that if any farmer forced to sell good under the MSP would then be reimbursed the differential between forced selling price and MSP?

The other issue which worries them is that in case of a dispute with a private purchaser (corporates), the poor farmers will be left powerless to defend themselves. The small and medium farmer will be ruined. The bills undermine the three pillars of our food security system. It is heartening and mind boggling to know that in the last four decades i.e 1980 onwards the income of the farmers from agriculture is static as compared to any other profession or services where the income has increased manifold. in this view of the matter, presently neither any farmer nor his progenies is at all interested in adopting this profession since it has become `ghaate ka sauda'.

A recent analysis for last ten years shows how successive Governments have been hesitant in increasing the minimum support price for procurement of farm produce, contrary to the norm that farmers are supposed to oet 1.5 per cent times higher than the cost of production under SP. The MSP data over the last decade reveals that MSP for all crops - Kharif and Rabi - have declined on an average. The data also shows how the minimum pricing mechanism is used by Governments to either strengthen their vote banks or pacify distressed farmers after an election is over. Farmers have been at the receiving end of the MSP hurdle for decades and now fear that the three bills further dilute the price guarantee on crops even after repeated Government assurances.

Even if some experts believe that the newly passed Acts will improve India's agricultural sector. trusting the Government seems to be the real hurdle for the country's farmers at this stage. To my mind. the well-known formula C2, as suggested by Swaminathan, an expert scientist on the subject, can be the best substitute to add value to the existing income of the farmers, which would make income of the farmers One and a half times more than the expenditure.

दीनबंधु चौ. छोटूराम

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए.इतिहास
एच.एफ.एस (सेवानिवृत)

चौ. छोटूराम का जन्म 24 नवंबर 1881 ई में गढ़ी सांपला जिला रोहतक में हुआ। प्राईमरी शिक्षा गांव में ही ली और सारे जिले में पहली पोजीशन प्राप्त की और आगे की शिक्षा सरकार द्वारा मिले वजीफे से प्राप्त की। गर्वनमैन्ट हाई स्कूल झज्जर से मैट्रिक तक पढ़े और बी.ए. की परीक्षा सैंट स्टीफन कॉलेज देहली से पास की व कानून की डिग्री आगरा विश्वविद्यालय से पास की और रोहतक में वकालत शुरू की। उन्होंने झूठे मुकदमे ना लेने, छल कपट से दूर रहना, मुव्किलों से सद्व्यवहार जैसे आदर्श कायम किए। गरीब को निशुल्क कानूनी मदद देते थे। इसके इलावा वे हमेशा किसानों की आय बढ़ाने के प्रयास करते रहते थे। इसके साथ–साथ किसानों के बच्चों की शिक्षा के लिए प्रयासरत रहते थे। इसी कड़ी को जोड़ते हुए उन्होंने 1913 ई. में चौ. बलदेव सिंह गाँव हुमायूँपुर के साथ मिलकर जाट हायर सैकेन्ड्री स्कूल रोहतक की स्थापना करवाई और चौ. भानीराम गंगाना का सपना पूरा किया। इसके साथ–साथ प्रथम विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेजी सेना में भर्ती होने हेतु किसानों के बच्चों को प्रेरित किया ''भर्ती होजा रै रंगरूट, आड़ै मिलैं तन्ने टूटे जूते, उड़ै मिलेंगे बूट'' उनकी इस जादूई वाणी का असर हुआ कि लगभग 25000 जवान अंग्रेजी सेना में भर्ती हो गए। आज भी यह परम्परा जारी है। भारतीय फौज पहले अंग्रेज हित में लड़ती थी और आज अपने स्वाभिमान के लिए लड़ती है। क्रिश्चियन मिशन स्कूल छात्रा वास के प्रभारी के विरुद्ध चलाए गए, आन्दोलन से इनका नाम जनरल राबर्ट के नाम से विख्यात हुआ। सन् 1915 ई. में 'जाट गजट' नामक अखबार निकाला।

उनका आदर्श मुंशी प्रेमचन्द था। "खींचों' ना मयानों को ना तलवार निकालों, जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो और उन्होंने ये साबित भी कर दिया। उन्हें सर' की उपाधि भी मिली और शासकों में उनके खौप की छाया भी प्रत्यक्ष रही, चौ. छोटूराम को कमिश्नर ने देशविरोधी घोषित

कर दिया, परन्तु जनता के आक्रोश के सामने झुकना पड़ा और अपना आदेश वापिस लेना पड़ा। हमेशा साहूकारों का विरोध किया और आन्दोलन भी हुआ उनके पुतले भी जलाए गए तथा यह की होया छोटू मोया के नारे लगे लेकिन वे अडिग रहे और अन्त में जीत हुई।

हमेशा किसानों की सोचते रहते थे। अंग्रेजी सेना में किसानों के बच्चों को भर्ती हीने हेतु उकसाया। उनके इस प्रयास से लगभग 2 दर्जन किसानों के बच्चे ब्रेगेडियर, मेजर, जरनल, लैटीनेट जरनल व जरनल तक के पदों को सुशोभित करके रिटायर हुए हैं। उनकी प्रेरणा से भर्ती हुए चौ० बदलूराम और चौ. छैलूराम को उनकी बहादुरी के लिए अंग्रेज का सर्वोच्च बहादुरी पुरस्कार विक्टोरिया क्रास से नवाजा गया। इसके इलावा अनेको जवानों को बहादुरी पुरस्कार मिल है।

चौ. छोटूराम ने स्वाधीनता संग्राम में डटकर भाग लिया। 1916 में पहली बार रोहतक कांग्रेस कमेटी का गठन किया। उनके लेखों को अंग्रेज भयानक करार देते थे, चो, छोटूराम, लाला श्याम लाल और नवल सिंह, लाला लालचन्द जैन और खान मुस्ताक हुसैन आदि सभी ने मिलकर रोहतक में मार्शला के दिनों में एक जलसा किया और इसमें अंग्रेजी हकूमत द्वारा किए गए अत्याचारों की धोर निंदा की जिससे सारे इलाके में भूचाल सा आ गया था। इससे अंग्रेजी राज की चूलें हिलती दिखाई दी क्योंकि अंग्रेजो की नींद इस जलसे ने पूर्ण रूप से उड़ दी थी। गांधी असहयोग आन्दोलन से असहमत होकर इन्होंने 1920 में कांग्रेस छोड़ दी। 1925 में चौ. साहब ने पुष्कर एक जलसा किया, 1934 में सिकर मे भी किराया कानून के विरुद्ध जलसा/रैली की, जिसमें 10000 जाट किसानों ने भाग लिया। इस रैली से चौ. साहब भारत की राजनीति में एक स्तम्भ बन गए। 1920 में आम चुनाव करवाए गए इसमें चौ साहब व चौ. लालचन्द जमीदारा पार्टी से विजयी हुए। इसके बाद चौ. छोटूराम व साथियों ने मिलकर सर फजले हुसैन के साथ गठबंधन कर लिया और सर सिकंदर हयात खान के साथ मिलकर युनियनिस्ट पार्टी का गठन कर लिया और 1937 में हुए आम चुनाव में 175 में से 99 सीटों पर इनकी पार्टी की जीत हुई। इस चुनाव में चौ. साहब के कद का अंदाजा कांग्रेस और अंग्रेजों को लगा। चौ. छोटूराम राजस्व मन्त्री बने और गरीबो व किसानों के मसीहा बन गये क्योंकि गरीबों व किसानों की भलाई हेतु अनेक कानून बनाए जो आज भी प्रभावी है इनमें से मुख्य कानून गरीबों को गिरवी व भूमि की वापसी का था, जो सितम्बर 1938 से प्रभावी हुआ। इसके इलावा .षि उत्पाद मंडी एक्ट 1938 जो मई 1939 से प्रभावी हुआ, लेबर एक्ट 1940, आदि अनको अधिनियम गरीब प्रजा के लाभ हेतु बनाए गए। इसमें कर्जमाफी एक्ट 1934 एक क्रान्तिकार एक्ट था जो कि गरीब मजदूर व किसानों को साहूकारों व आढ़तीयों के कर्जा से मुक्ति दिलाने का था। इस कानून को बनवाने मे एक बहुत बड़ी घटना का हाथ है। इस एक्ट के तहत गरीब व किसान का दुधारू पशु, गाय, बछड़ा बैल ऊँट रहड़ा घर, गितवाड़ और आजीविका का कोई साधन निलाम नही किया जाने का था। एक घटना के अर्न्तगत साहूकार द्वारा एक गरीब किसान के दुध ाारू पशु बैल गाड़ी आदि सब कुर्क कर लिए गए तो किसान ने लाहौर हाईकोर्ट में गुहार लगाई कि मेरे आजीविका के साध ान कुर्क ना किए जायें। न्यायाधीश श्री शादीलाल ने किसान से व्यंगात्मक लहजे में कहा था कि चौ. छोटूराम नाम का एक व्यक्ति है वही ऐसे कानून बनाता है। उन्ही से कानून बनवाकर लाओ तभी आपको उसकी चीजों की निलामी से मुक्ति मिल सकती है। वह व्यक्ति चौ. साहब के पास आया उसने अपनी व्यथा सुनाई तो चौ. छोटूराम ने कानून में ऐसा संसोधन करवाया कि किसी अदालत को टिप्पणी योग्य नहीं छोड़ा क्योंकि अदालत की सुनवाई पर ही प्रतिबंध लगा दिया और अदालत को व्यंग का जवाब दिया– उसके बाद जिन्नाह की पंजाब की राजनिती में कोई दखल अन्दाजी नही रही श्री शादी लाल वही जज थे जिन्होंने अपनी टिप्पणी से जाटो को शुद्ध (शुद्र) घोषित किया था।

सन् 1942 में सर सिकन्दर हयात खान का निधन हो गया और खिजर हयात खां टिवाना पंजाब के चीफ मिनिष्टर बनाए गए। 1944 से जिन्हा ने चीफ मिनिष्टर पर दरबार बनाया कि चौ. छोटूराम का कद कम किया जाए। इस बात से जिन्नाह के साथ सीधा टकराव हो गया और चौ. साहब ने जिन्ना को लताड़ लगाई। जिन्ना पार्टी का नाम युनियनिष्ट से मुस्लिम लीग करवाना चाहते थे । चौ. साहब के सामने अब कांग्रेस और मुस्लिम लींग दो चुनौती हो गई। विश्व युद्धों के चलते हरियाणा के इलाकों से अंग्रेजी सेना में भर्ती भारतीय सैनिकों की वजह से दोनों विश्व युद्धों में अंग्रेजो की जीत से अंग्रेज चौ. छोटूराम से खुश थे अंग्रेजो ने हरियाणा के लोगों द्वारा युद्धों में कुर्बानी देकर अपनी जीत का श्रेय हरियाणा वासियो दिया।

हरियाणा वासीयों से खुश होकर अग्रेजों ने वचन दिया था कि सतलुज नदी पर भाखड़ा बांध बनाकर इसका पानी हरियाणा को सूखी धरती को सिंचाई के लिए दिया। बांध बनाने हेतू प्रस्ताव चौ. छोटूराम द्वारा ही रखा गया था। बिलासपुर के राजा के साथ चौ. छोटूराम ने बांध निर्माण के लिए समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। चौ. छोटूराम ने गरीब की भलाई हेतु अनेक कानून बनवाए गरीबो की भलाई हेतु हमेशा तत्पर रहते थे। वे कहते थे कि खुदी को बुलन्द कर इतना कि हर तकदीर से पहले खुदा बन्दे से पूछे बता तेरी रजा क्या है गरीब छात्रो के लिए उन्होंने विद्यार्थी कोष बनवाया जिसकी मदद गरीब

छात्रों को शिक्षा दी जाने लगी। उनके बनवाए विधार्थी कोष से पढ़कर पाकिस्तान के एक मात्र नोबल पुरस्कार विजेता, अब्दुस कलाम कहता था कि यदि चौ. छोटूराम नहीं होते तो अब्दुस कलाम भी नहीं होते। चौ. छोटूराम जाति–पाति, अमीर–गरीब, रंगभेद आदि सभी से ऊपर थे। वे मानवतावादी थे जो जीवनपर्यन्त काश्तकार, कामगार के हक के लिए प्रयासरत रहे। उनके कारनामो से वे दीनबंधु कहलाए। सन् 1920 से 1945 तक पंजाब की राजनीति के सूर्य चौ. छोटूराम का 9 जनवरी 1945 को स्वर्गवास हो गया और एक क्रान्तिकारी युग का सूर्य अस्त हो गया लेकिन कृषक वर्ग उन्हें आज भी नमन करता है। चौ. छोटूराम के बारे लिखने को तो बहुत कुछ है। इनके कारनामों का पूरा ग्रन्थ लिखा जा सकता है। मेरी लेखनी का पूर्ण सारांश यह है कि किसान, काश्तकार और कामगार की भलाई के लिए जो कार्य चौ. छोटूराम ने किए उनके इलावा न कोई और कर पाया है और न ही कोई कर सकता है क्योंकि किसानों को साहूकारों के चंगुल से चौ. छोटूराम ने ही बचाया था। उनके बाद किसानों की किसी ने सुध नहीं ली और बेचारा किसान चौ. साहब को याद करके रोते हुए उनके दोबारा धरती पर जन्म लेने की कामना करता रहता है।

शिखर पुरुष चौधरी छोटूराम

– **बी.एस.गिल,** सचिव
जाटसभा, चण्डीगढ/पंचकूला

भारत की राजनीति में बहुत से शिखर पुरुष हुए हैं, जिन्होंने न केवल देश में बल्कि विदेशों तक अपनी छाप छोड़ी और विशेष पहचान भी बनाई। इनमें चौधरी छोटूराम एक विशेष शख्शीयत थे जिनके नाम के साथ चौधरी, सर, रायबहादुर, दीनबंधु, रहबरे आजम और किसान मसीहा जैसे सम्मानजनक शब्द जुड़ते रहे। वे 1917 में रोहतक जिला कांग्रेस के प्रधान बने थे और तीन साल में ही राजनीति को इतना समझ गए कि अपनी राजनीति की नई राह बना ली। चौधरी छोटूराम की जीवनी लेखक रघुबीर सिंह शास्त्री के अनुसार, उस समय हालात बहुत खराब थे, खेती का एकमात्र आधार बैल, वर्षा और कच्चे कुएं थे। उस समय बड़े–बड़े कृषि फार्म थोड़े ही होते थे और ना ही रुई, कपडे और चीनी की मिलें होती थी। चरखा, करघा, रहंटी कपड़ों के उत्पादक होते थे। पत्थर, लकडी और कोल्हू, गुड़ और तेल के प्रेरक थे। कर्ज लेने के लिए न तो सहकारी समितियां थीं और ना ही केंद्रीय, प्रादेशिक अथवा स्थानीय बैंक। उस समय सबसे छोटा सिक्का दमडी और सबसे बडा कलदार होता था। इसी को आजकल रुपया कहते हैं। सोने का सिक्का तो राजा महाराजाओं की ही शान होता था और अशरफी कहलाता था। हुंडिया बडे बडे सेठों के चलती थी। प्राय हरियाणा समेत पूरे भारत की यही हालत तब थी। अर्थ तंत्र का सारा चक्र साहूकारा करने वाले महाजनों के चारों और घूमता था।

विख्यात पत्रकार डॉ. सतीश त्यागी के अनुसार तब की सामाजिक स्थिति ऐसी होती थी कि छूआछात और जाति पाति का बोलबाला था। एक पीढी का कर्ज लगातार कई पीढ़ियों तक चलता रहता था। मरने वाला अपने बेटे पोतों से कहकर जाता था कि मेरा कर्ज चुका देना वरना लाला वहां वसूल करेगा। आपस में मुक्कदमेबाजी के अलावा शादी ब्याह और श्राद्ध के खर्चे कर्ज की ही राह खोलते थे। सौ घर की बस्ती में केवल तराजू बाट लेकर नया आबाद होने वाला वणिक दस वर्ष में ही बोहरा, महाजन और साहूकार बन जाता था। गांधी, चौधरी, पटेलगिरी और नेतापन उसके इर्दगिर्द घूमते थे। कुछ इस तरह की परिस्थितियों और हालात में जन्म लिया था एक महापुरुष ने और जो देखते ही देखते गरीब गुरबे किसानों का मसीहा बन गए। उनका जन्म 24 नवंबर, 1881 में रोहतक, हरियाणा के एक छोटे से गांव गढ़ी सांपला में बहुत ही साधारण परिवार में हुआ था। उन्होंने ब्रिटिश शासन में किसानों के अधिकारों के लिए आवाज बुलंद करने के लिए जाना जाता था। वे पंजाब प्रांत के सम्मानित नेताओं में से थे और उन्होंने 1937 के प्रांतीय विधानसभा चुनावों के बाद अपने विकास मंत्री के रूप में कार्य किया। उनका असली नाम रिछपाल था और वो घर में सबसे छोटे थे, इसलिए उनका नाम छोटू राम पड़ गया। उन्होंने अपने गांव से पढ़ाई करने के बाद दिल्ली में स्कूली शिक्षा ली और सेंट स्टीफंस कॉलेज से ग्रेजुएशन पूरा किया, साथ ही अखबार में काम करने से लेकर वकालत भी की। सर छोटूराम बहुत ही साधारण जीवन जीते थे और वे अपनी सैलरी का एक बड़ा हिस्सा रोहतक के एक स्कूल को दान कर दिया करते थे। वकालत करने के साथ ही उन्होंने 1912 में जाट सभा का गठन किया और प्रथम विश्व युद्ध में उन्होंने रोहतक के 22 हजार से ज्यादा सैनिकों को सेना में भर्ती करवाया। उस समय का लोकगीत "भर्ती होजा रे रंगरूट, यहां तो पहने टूटे जूते, वहां मिलेगें बूंट" काफी लोकप्रिय हुआ।

1916 में जब रोहतक में कांग्रेस कमेटी का गठन हुआ तो वो इसके अध्यक्ष बने लेकिन बाद में महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन से असहमत होकर इससे अलग हो गए।

उनका कहना था कि इसमें किसानों का फायदा नहीं था। उन्होंने यूनियनिस्ट पार्टी का गठन किया और 1937 के प्रोवेंशियल असेंबली चुनावों में उनकी पार्टी को जीत मिली थी और वो विकास व राजस्व मंत्री बने। छोटूराम को साल 1930 में दो महत्वपूर्ण कानून पास कराने का श्रेय दिया जाता है। इन कानूनों के चलते किसानों को साहूकारों के शोषण से मुक्ति मिली। ये कानून थे पंजाब रिलीफ इंडेब्टनेस, 1934 और द पंजाब डेब्टर्स प्रोटेक्शन एक्ट, 1936 इन कानूनों में कर्ज का निपटारा किए जाने,
उसके ब्याज और किसानों के मूलभूत अधिकारों से जुड़े हुए प्रावधान थे।

स्वाभिमान उनमें बचपन से ही था। सैंट स्टीफन स्कूल (दिल्ली) के हॉस्टल में करीब 24 देहाती परिवेश के बच्चे रहते थे। हरियाणा(उस समय पंजाब) के गढ़ी सांपला गांव के किसान के बेटे को इन बच्चों का मॉनिटर बनाया गया। होस्टल का सफाई कर्मचारी हॉस्टल की सफाई के बजाए अधीक्षक (पंडित जानकी नाथ) के घर पर काम करता रहता था और होस्टल में देहाती परिवेश के छात्रों को जरूरी सुविधाओं से वंचित रखा गया था। उन्होंने यह बात प्रिंसिपल के संज्ञान में लाई और सभी सहपाठियों से इस अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने को कहा। सभी विद्यार्थियों ने हड़ताल कर दी जो पंद्रह दिन तक चली। हड़ताल से विवश होकर प्रिंसिपल केली (Kelly) ने सभी जरूरी सुविधाएं उपलब्ध करवाई और सफाई कर्मचारी को निर्देश दिया कि वह मॉनिटर की आज्ञा का पालन करे। उसके ऐसे साहस के कारण उनके सहपाठी उन्हें "जनरल रॉबर्ट" कह कर बुलाते थे। उस जनरल रॉबर्ट का नाम था चौधरी छोटूराम।

चौधरी छोटूराम को आगे बढता देख कुछ वर्ग तो बिल्कुल जलेभुने बैठे थे और उन पर तरह तरह के आरोप भी लगाते थे। कोई उन्हें घोर साम्प्रदायिक बताता तो कोई कुछ। पर उनका कहना बड़ा साफ था कि "मैं सांप्रदायिक नहीं हूँ, न मैं हिन्दू के हक के लिए और न मुस्लिम के हक के लिए लड़ रहा हूँ, मैं लड़ रहा हूँ सिर्फ किसान, मजलूम, पिछड़ों के हक के लिए। मेरा पंथ सामान्य धर्मनिरपेक्ष और आर्थिक आधार पर टिका है। साल 1939, एक जनसभा का संबोधित करते हुए चौधरी छोटूराम ने कहा था कि "इस देश में नो करोड़ मुस्लिम हैं, यह नामुमकिन है कि हिंदू उन्हें इस देश से बाहर निकाल दें, या मुस्लिम हिंदूओं को खत्म कर दें। इसलिए आपसी नफरत को भुला कर, हमें भाईचारे की मिसाल देते हुए मिलकर देश की आजादी व आर्थिक समृधि के लिए काम करना चाहिए।

असल में चौधरी छोटूराम एक बहुत दूरदर्शी व सच्चे राष्ट्रवादी हस्ती थे। उन्होंने पंजाब के हर तबके के उत्थान के लिए काम किया था और कानून बनाए थे। पंजाब में दलित तबके के सामाजिक उत्थान के लिए छुआछात कानून बनाया। हिसार के मोठ गाँव में जाट व रांगड़ो ने चमारों को कुँए से पानी भरने से मना कर दिया जिसके लिए वह खुद मोठ गाँव गए और वहां जाटों व रांगड़ो को समझाया और खुद कुँए से पानी भरवा कर दलित के सर पर घड़ा रखा। मजलूमों–मजदूरों के लिए उन्होंने कई कानून बनाए। कानून बना कर बेगार खत्म की, कार्य के घंटे तय किये, न्यूनतम भत्ता तय किया। पंजाब में मजलूम भूमिहीनों को मुलतान–निलिबार में कृषि भूमि अलोट कर उन्हें जमींदार बनाया। पूरे देश में यह पहला ऐसा वाक्या था जहाँ भूमिहीनों को कृषि भूमि अलोट की गई थी। अछूतों को शिक्षा संस्थानों व नौकरियों में आरक्षण व वजीफों का प्रावधान किया।

उनके जीवन पर बारिकी से अध्ययन करने वाले राकेश सांगवान का कहना है कि पंजाबियों की आर्थिक हालातों में सुधार का जो सबसे पहला प्रयास उन्होंने किया वह था पंजाबियों को फौज में भर्ती का आह्वान। उनके इस प्रयास का असर यह हुआ कि देहात के जो पंजाबी फौज में भर्ती हुए उससे सालाना 4–5 करोड़ की आमदनी बढ़ी जोकि उस वक्त पंजाब के लैंड–रेवेनु के बराबर थी। कृषि व किसानों के हालातों के सुधार के अनेक कानून बनाए। कृषि सिंचाई के लिए कई परियोजनाएं शुरू की। 1927 में सदन में जल परियोजना का प्रस्ताव रखा। खरीफ नहरें विस्तार योजना (1940), हवेली परियोजना 1939, दो गैर बारहमासी नहरें, हिसार व रोहतक जिलों के लिए (1941 –42), पश्चिमी पंजाब में सिंचाई की संभावनाएं देखने के लिए 1943–44 में एक डिविजन का गठन किया। साल 1943 में गुडगाँव जिले में बंद सिंचाई को पुनर्जीवित किया, नई योजना, टयूबवेल सिंचाई व लिफ्ट सिंचाई सिस्टम, पश्चिमी युमना नहर से सिंचाई। साल 1944 में सिंध व बिलासपुर सरकारों से सभी बाधाएं दूर कर 8 जनवरी 1945 यानि ठीक उनके निर्वाण दिवस से एक रात पहले भाखड़ा बाँध परियोजना की फाइल पर अपने दस्तखत किये। पर ये अफसोस है कि भाखड़ा बाँध पर उनका न कोई नाम न कोई उन्हें याद करता है। राकेश सांगवान बताते हैं कि 1938 में चौधरी छोटूराम ने केंद्र सरकार को सुझाव दिया कि विदेशी मुल्कों के साथ प्रतिस्पर्धा कम करने के लिए, पंजाबी औधोगिक प्रगति के हित में, औद्योगिक और उपभोगताओं को उचित प्रतिनिधित्व दिया जाना चाहिए। पंजाब में कुटीर व छोटे उद्योगों के लिए व्यापक योजना बनाने के लिए उन्होंने उस जमाने के जानेमाने अर्थशास्त्री के.टी.शाह को इसका जिम्मा दिया। पंजाब में उद्योगों के विकास के लिए 1938–39 में उन्होंने कुछ लोग विदेशों में ट्रेनिंग के लिए भेजे, इसके लिए 10000 का बजट रखा। पंजाब में 'इंडस्ट्रियल रिसर्च फण्ड'

गठन किया, जोकि पूरे देश में यह पहली पहल थी, इसके लिए 150000 रुपये का अलग से फंड का प्रबंध किया।

चौधरी छोटूराम की उद्योग नीतियों व प्रयासों की उस दौर में खूब सराहना हुई। सिविल एंड मिलिट्री गजट ने लिखा था कि 'यह भारत के आधुनिक आर्थिक इतिहास में अग्रणी उपाय हैं'। उड़ीसा के प्रीमियर श्री बिस्वा नाथ ने दिसम्बर 1937, द–ट्रिब्यून अखबार को एक व्यक्तय दिया था कि औद्योगिक विकास में पंजाब उन प्रान्तों से भी आगे निकल गया है जिनमें कांग्रेस की सरकार है। ऐसा ही व्यक्तय बॉम्बे के उद्योग मंत्री श्री एल.एम.पाटिल ने दिया था कि पंजाब की यूनियनिस्ट सरकार ने इस दिशा में सराहनीय व उल्लेखनीय काम किया है। जब हम आगरा से आगे निकलते हैं तो चौधरी छोटूराम द्वारा उस दौर में संयुक्त पंजाब में रखी विकास की बुनियाद का अंदाजा हो जाता है। आज भी आगरा से आगे और हरियाणा–पंजाब के कृषि और किसान के हालात में फर्क खुद ही सब बयान करते हैं। चौधरी छोटूराम भ्रष्टाचार व शोषण को लेकर बड़े सख्त थे। इसके लिए उन्होंने जाट गजट व 'द–ट्रिब्यून' ठगी बाजार की सैर और बेचारा जमींदार नाम से धारावाहिक लेख निकाले थे।

असल में चौधरी छोटूराम की कमी आज सही में खल रही है। ज्यों ज्यों समय बीत रहा है उनकी बातें और सोच प्रासंगिक होती जाती है। आज किसान पीसता जा रहा है, कर्ज के दुश्चक्र में फंसा बैठा है और फसलों के दाम भी नहीं मिल पा रहे हैं लेकिन इसके बावजूद पूरा देश आज एक किसान नेता को देखने के लिए तरस रहा है। वो पाखंड के सख्त खिलाफ थे लेकिन आज युवा वर्ग ही पाखंड में धंसता जा रहा है। वो युवाओं को शिक्षा के हिमायती थे लेकिन आज शिक्षा दिन प्रतिदिन महंगी होती जा रही है। ऐसे में अगर सर छोटूराम आज हम सबके बीच होते तो ललकार–ललकार कर हमें जिंदा होने का सबूत देने की मांग करते। अगर हम सच में ही चौधरी छोटूराम को नमन करना चाहते हैं तो उनके बताए रास्ते पर चलना होगा और अपने हक के लिए बोलना सीखना होगा। केंद्रीय सरकार से भाखड़ा नंगल डैम पर उनके नाम की प्रतिमा स्थापित करने और पंजाब विश्वविद्यालय में चौधरी छोटूराम चेयर स्थापित करने की पुरजोर आग्रह करना होगा ताकि कृषि विकास में आवश्यकता अनुसार संशोधन करके किसान, कामगार, काश्तकार के कल्याण हेतू स्थाई नीति बनाई जा सके।

समृद्ध परंपराओं का प्रदेश हरियाणा

– डॉ अनिल, साभारः अभिव्यक्ति

हरियाणा भारत का वह भू–भाग है, जहाँ भारतीय सभ्यता फली–फूली। यहाँ के गौरवमय इतिहास का वर्णन मनुस्मृति, महाभाष्य, महाभारत तथा पुराणों में भी हुआ है। मनुस्मृति में उल्लेख है कि सरस्वती एवं .षद्वती नदियों के बीच जो प्रदेश स्थित है, वह 'ब्रह्मावर्त' अर्थात् हरियाणा है। मनु के अनुसार इस प्रदेश का अस्तित्व देवताओं से हुआ, इसलिए इसे 'ब्रह्मावर्त' कहा गया है। हरियाणा ऋषियों–मुनियों की धरा है जहाँ महर्षि विश्वामित्र, च्यवन, वशिष्ठ, भृगु, दुर्वासा, जमदग्नि आदि ने तपस्या की। महाभारत मनुस्मृति, भागवत, वायु, वासन व मार्कंडेय आदि अनेक पुराणों की रचना भी इसी प्रदेश में हुई। हरियाणा वीर–बाँकुरों की धरती है, जहाँ समय–समय पर शक, हूण, कुषाण, मुगल आदि विदेशी आक्रांताओं ने आक्रमण किया, लेकिन प्रदेश के रणबाँकुरों ने भी उनका मुँहतोड़ जवाब दिया। यही वह प्रदेश है जहाँ द्रविड़ व आर्य सभ्यताओं का संगम हुआ। जैन, नाथ और सूफी संप्रदाय भी यहाँ फले–फूले। हरियाणा अनेक सूफी–फकीरों की भी साधना स्थली है। यहाँ अनेक विद्वानों ने उच्चकोटि के साहित्य की रचना की। 'कादंबरी', 'हर्षचरित' ग्रंथ भी इसी प्रदेश में लिखे गये। राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में यहाँ के कवियों ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

स्वर्ग के समान हरियाणा

हरियाणा प्रदेश के नामकरण के विषय में भी जिज्ञासा होना स्वाभाविक है, हरियाणा का नामकरण कैसे हुआ? इस बारे में भिन्न–भिन्न विद्वानों ने भिन्न–भिन्न मत व्यक्त किये, जिनका कोई–न–कोई आधार रहा है। कुछ विद्वान हरियाणा का नामकरण 'हर' एवं 'यान' के मेल से हुआ मानते हैं। हरियाणा के निवासियों में भगवान शिव के प्रति अगाध श्रद्धा रही है, इसलिए शिव के ही प्रसिद्ध नाम 'हर' के कारण इस प्रदेश का नाम 'हरयाण' पड़ा, जबकि कुछ विद्वानों के अनुसार हरियाण के 'हरि' शब्द का अर्थ श्रीकृष्ण से संबंधित है तथा 'यान' को कृष्ण के रथ का सूचक बताया गया है। चूँकि महाभारत युद्ध के दौरान श्रीकृष्ण का रथ अर्थात् 'यान' इसी क्षेत्र से गुजरा था, इसलिए उनके आगमन के उपलक्ष्य में ही इस प्रदेश का नाम हरियाणा रखा गया। लेकिन यह धारणा इस प्रदेश के नामकरण के संबंध में उचित प्रतीत नहीं होती। आज प्रदेश के अधिकांश विद्वानों, इतिहासकारों को इस घटना में ही वज़न नजर आता है कि हरियाणा का संबंध हरियाली से होने के कारण ही इस प्रदेश का नाम हरियाणा पड़ा। पहले यह प्रदेश घने जंगलों से आच्छादित था। यहाँ का चप्पा–चप्पा हरी–भरी वनस्पतियों से श्रृंगारित नजर आता था। कुल मिलाकर पूरा प्रदेश ही हरियाली का आँचल ओढ़े था।

इसलिए हरियाला से बिगड़कर ही इस प्रदेश का नाम हरियाली पड़ा।

जहाँ तक हरियाणा की प्राचीनता का सवाल है तो इसका वर्णन सबसे पहले संवत् ११८६ में रचित 'पार्श्वनाथ चरित्र' नामक एक जैन ग्रंथ में हुआ है। लगभग सात सौ वर्ष पूर्व सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक के समय के एक शिलालेख में भी 'हरियाणा' शब्द का प्रयोग हुआ है। बलबन के शासनकाल के एक शिलालेख में भी 'हरियानक' शब्द प्रयुक्त हुआ है, जो हरियाणा का ही स्थानापन्न है। यह शिलालेख पालम की एक बावड़ी से प्राप्त हुआ था। सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक के समय के एक शिलालेख में हरियाणा को स्वर्ग के समान बताया गया है।

देशास्ति हरियाणाख्यः प्रथिण्याँ स्वर्गसत्रिमः।
ढिल्लिकाख्यापुरी तत्र तोमरैरस्तिमिननर्मिता।।
तोमरानंन्तरं तस्यां राज्यां निहतकंटकमृ।
वाहमानाः नुपाश्रचक्रु प्रजापालन तत्पराः।।

तीर्थ और मेले–

हरियाणा ही एक ऐसा प्रदेश है, जहाँ सैकड़ों की संख्या में तीर्थ हैं। कुरुक्षेत्र की ४८ कोस की पवित्र भूमि में ही ३६० के करीब तीर्थ बताये जाते हैं, जिनका संबंध महाभारत काल से है। प्रदेश के हर गाँव, कस्बे व नगर में गूँगे पीर की मढ़ी, शिवालय व पीरों–फकीरों के मकबरे नजर आएँगे। हरियाणा के विभिन्न स्थानों पर लगने वाले मेलों का भी अपना अलग ही महत्व है। हरियाणा में नारनौल के निकट ढोसी पहाड़ी पर लगने वाला सोमवती अमावस्या का मेला काफी प्रसिद्ध है।

जनजीवन की छटा–

हरियाणा में लोकनृत्यों की परंपरा भी प्राचीन काल से चली आ रही है जो पुरुषों और महिलाओं द्वारा फसल कटाई के बाद तथा विभिन्न मांगलिक अवसरों पर किये जाते हैं। फागुन लोकनृत्य फाल्गुन के महीने में किया जाता है। लोकगीतों का भी हरियाणा के जनजीवन से सीधा संबंध है। हरियाणा के फाल्गुनी लोकगीत श्रृंगार रस से ओत–प्रोत है। हरियाणा के लोकजीवन में बारहमासिया लोकगीत भी विशेष महत्व रखते हैं।

गौरवशाली महापुरुषों की भूमि–

हरियाणा ने कई गौरवशाली महापुरुष भी दिये हैं, जिनमें लाला लाजपतराय, पं. दीनदयाल शर्मा, सर छोटूराम, सर शादीलाल, पं. नेकीराम शर्मा, लाला दुनीचंद, बाबू लाल मुकुंद गुप्त, राय बहादुर लाल मुरलीधर आदि प्रमुख हैं। उर्दू के महान शायर ख्वाजा अल्ताफ हुसैल हाली पर भी हरियाणा को गर्व है, जिनका जन्म पानीपत में हुआ था। हरियाणा वीरांगनाओं की भी धरती है। इतिहास साक्षी है यहाँ की बहादुर महिलाओं ने युद्ध क्षेत्र में जाकर शत्रुओं से दो–दो हाथ किये और कई मौकों पर उन्हें युद्ध क्षेत्र से भी खदेड़ा। मेवात की वीरांगनाओं ने तो समय आने पर अपने पुत्रों को भी शत्रुओं को मुँहतोड़ जवाब देने के लिए प्रेरित किया। हरियाणा की सर्वखाप पंचायत सेना का जब तैमूरलंग से युद्ध हुआ, तब हरियाणा की वीर महिलाएँ भी शत्रु सेना पर खाँडे लेकर टूट पड़ी थीं। युद्ध के समय हरियाणा की महिलाएँ सैन्य बल के लिए रसद जुटाने का काम भी करती थीं।

सूफी, सिद्ध, नाथ, जैन, सतनाम आदि विभिन्न धर्मावलंबी संत, कवियों ने प्रदेश के हिंदी साहित्य को अपनी काव्य प्रतिभा से समृद्ध किया है। हरियाणा के प्रमुख संत कवियों में बू अलीशाह कलंदर, गरीबदास, निश्छलदास, संत जैतराम, संत हरदेवदास के नाम लिये जा सकते हैं। भले ही ये आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन इनका अस्तित्व तो इनकी रचनाओं में युगों–युगों तक रहेगा।

अनेक ऐतिहासिक युद्धों का साक्षी–

हरियाणा को भारत की ऐतिहासिक युद्ध भूमि के रूप में जाना जाता है। कुरुक्षेत्र जहाँ कौरवों और पांडवों के मध्य महाभारत का युद्ध लड़ा गया हरियाणा का ही एक भाग है। पश्चिमोत्तर और मध्य एशियाई क्षेत्रों से हुई घुसपैठों के रास्तें में पड़ने वाले हरियाणा को सिकंदर (३षु ई.पू.) के समय से अनेक सेनाओं के हमलों का सामना करना पड़ा। यह भारतीय इतिहास की अनेक निर्णायक लड़ाईयों का प्रत्यक्षदर्शी रहा है। इनमें प्रमुख हैं– पानीपत का पहला युद्ध – 1526 में जब मुगल बादशाह बाबर ने इब्राहीम लोदी को हराकर भारत में मुगल साम्राज्य की नींव डाली। पानीपत का दूसरा युद्ध– 1556 में जब अकबर ने अफगान सेना को पराजित किया 1761 का युद्ध जिसमें करनाल में फारस के नादिरशाह ने ध्वस्त होते मुगल साम्राज्य को जोरदार शिकस्त दी। और पानीपत का तीसरा युद्ध १७६१ में जब अहमदशाह अब्दाली ने मराठा सेना को निर्णायक शिकस्त देकर भारत में ब्रिटिश हुकूमत का रास्ता साफ कर दिया। हरियाणा के पानीपत, करनाल, अंबाला, नारनौल, कुरुक्षेत्र, रिवाड़ी आदि नगर ऐतिहासिक युद्धों के साक्षी हैं।

पुरातत्व का खजाना–

पुरातत्व की दृष्टि से भी हरियाणा एक समृद्ध प्रदेश रहा है। यहाँ पाषाण युग के अस्त्र–शस्त्र सुकेतड़ी, सूरजपुर, पिंजौर आदि स्थानों से मिल चुके हैं। सिंधु सभ्यताकालीन दुर्ग भी खुदाई के दौरान इस प्रदेश में पाया गया। हरियाणा में थानेसर के निकट गाँव दौलतपुर में भी खुदाई के दौरान सिंधु घाटी सभ्यता के कई अवशेष पाये गये। इसके अलावा प्रदेश के विभिन्न भागों में की गयी खुदाई के दौरान सिंधु घाटी सभ्यता के कई अवशेष पाये गये। इसके विभिन्न भागों में की गयी खुदाई से सिंधु घाटी सभ्यता की कई विशिष्ट वस्तुएं भी काफी संख्या में मिली हैं। हरियाणा में मीताथल, सीसवाल, बणावली, दौलतपुर, भगवानपुर आदि गाँवों में पुरातन काल के कई अवशेष मिलते रहे हैं। इन प्राच्य अवशेषों में छैनी, कंगन, खिलौने, बैलगाड़ी के पहिए, बर्तन आदि हरियाणा में हिंदी साहित्य के सृजन की भी गौरवशाली परंपरा चली आ रही है।

विश्व विख्यात वैज्ञानिक डॉ. रामधन सिंह की याद में

– सूरजभान दहिया

शेष पेज–9 (पिछले प्रकाशन का)

"Being a genuine and genius cerealist he maintained excellent germ plasms. With his persistent, bright and brilliant efforts, he developed nine famous improved varieties of wheat, eight of paddy, five of barely and three of pulses. No scientist (except him) has ever done such a large volume of research in the world"

केन्द्रीय आलु अनुसंधान संस्थान, शिमला के भूतपूर्व निदेशक डा. मुख्यतार सिंह ने उन्हें हरित क्रांति का अग्रदूत माना था तथा उनका कहना था– "1960 के दशक में डा. बोरलोग ने जो मैक्सिन गेहूं की किस्में निकाली थी, वास्तव में उनका श्रीगणेश तो डा. रामधन सिंह द्वारा विकसित गेहूं की किस्में सी–518 से 1930 के दशक में हो चुका था।" यहां यह कहना भी उचित होगा उनकी सी–519 गेहूं की किस्म कनाडा और मैक्सको में रोटी की स्वादिष्टता तथा अन्य गुणों के कारण बहुत लोकप्रिय हुई थी। भारत में तो सी–519 गेहूं की किस्म अन्य गेहूं की किस्मों से उस समय 4 रूप्ये मन अधिक दामों पर बिकती थी। विश्व के कृषि वैज्ञानिकों ने डा. रामधन सिंह की विकसित की हुई गेहूं की किस्मों तथ डा. नेमिन बोरलोग द्वारा विकसित गेहूं की किस्मों का गहन तुलनात्मक अध्ययन किया था तथा पाया था कि "डा. रामधन सिंह की विकसित गेहूं की किस्में काफी अधिक भूसा उपलब्ध कराती हैं जबकि डा. बोरलोग द्वारा विकसित किस्में बोनी होने के कारण बहुत थोड़ा भूसा देती हैं। पशुधन संपदा के लिये भारत में तो भूसे की बहुत आवश्यकता एवं महतत्वता है। इसके अतिरिक्त डा. बोरलोग की गेहूं की किस्मों में रसायन खाद एवं अधिक पानी की मात्रा अति आवश्यक है जबकि डा. रामधन सिंह की गेहूं की किस्मों के लिये प्राकृतिक खाद एवं कम पानी चाहिये। डा. बोरलोग की किस्मों को बचाने के लिए कीटनाशक दवाइयां छिड़कनी पड़ती हैं जबकि डा. रामधन की विकसित गेहूं की किस्मों में कीटनाशक दवाइयों की जरूरत नही पड़ती।" वर्ष 2022 के अंत तक विश्व की जनसंख्या 800 करोड़ से ऊपर हो जायेगी तथा बढ़ती खाद्यान्नों की आवश्यकता हेतु दूसरी हरित क्रांति की आवश्यकता का आभास हो रहा है। यू.न.ओ की फूड व कृषि संस्थान का अनुमान है कि 2025 तक विश्व में 180 करोड़ लोग ऐसे देशों में रहेगे जहां पानी की गंभीर किल्लत होगी और हमें कम पानी की जरूरत वाली खाद्यानों की किस्में विकसित करनी हैं।" और इस संस्था द्वारा डॉ० रामधन सिंह द्वारा विकसित खाद्यान्नों की किस्मों की ओर जाने पर बल दिया जा सकता है। डॉ० बोरलोग की विकसित गेहूं काकी किस्मों ने काफी कृषि क्षेत्र को बंजर व भू–जल की कमी वाला दिया हैं।

डॉ० बोरलोग ने 7–9 मोर्च 1968 को पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना तथा हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार का दौरा किया था। हिसार में डॉ० रामधन सिंह ने डॉ० बोरलोग से एक प्रश्न किया था "क्या आप मेरी गेहूं की उन्नत किस्मों को म्यूजियम में रखकर पुरातत्व अवशेष तो नहीं समझ बैठे हैं?" डॉ० बोरलोग ने बड़ी विनम्रतापूर्वक से उत्तर दिया। – "नहीं सर ने हमारी शंकर नस्ल की किस्में तैयार करने का अभिन्न हिस्सा हैं और आप द्वारा शोध ही ने तो मुझे आगे बढ़ने का अवसर प्रदान किया था। मैं 'सर' आपका अति ऋणी हूँ की मेरी सफलता के पीछे केवल आप – केवल आप ही हैं।" डॉ० बोरलोग को गेहूं की उन्नत किस्म में उन्नत करने के लिये नोबल पुरस्कार मिला। नोबल पुरस्कार देने में कुछ पश्चिमी सभ्यता हावी होती जा रही है। ज्ञान के क्षेत्र में इस प्रकार की साजिश को मानवता के लिए अब बड़ा खतरा माना जा रहा है। इसी साजिश के कारण न गांधी जी को और न ही डॉ० रामधन सिंह को नोबल पुरस्कार का सम्मान मिल पाया। न ही उन दोनों को इस पुरस्कार का सम्मान मिल पाया। वे दोनों इस पुरस्कार पाने के सही हकदार थे। इस पर आइनस्टाईन ने कहा था – "मनुष्य वहीं सम्मान का अधिकारी होता है जो समाज को कुछ अजूबा दे पाये चाहे वह इस एवज में कुछ पाये या न पाये।"

डॉ० रामधन सिंह कृषि व अनुसंधान कालेज के प्रिंसीपल रहे थे। उनका अगाध लगाव पढ़ाने में था तथा वे एक असाधारण अध्यापक थे। डॉ० चन्द्रशेखर सुब्रामनयम, पालडाईरक, फ्रेड होयले की तरह डॉ० रामधन सिंह भी ग्रेजुवेट करने वाले छात्रों को पढ़ाते थे। डॉ० नेगी, डॉ० गिल, पं० धनीराम उनके छात्र कहते थे – "Our revered teacher Dr. Ram Dhan Singh fired our imagination and we thirsted for more" वे कालेज के प्रिंसीपल कम फार्म वैज्ञानिक अधिक थे। उनकी दिनचर्या कृषि फार्म से शुरू होती थी तथा वहीं से रात के विश्राम के लिये जाने हेतु समाप्त होती थी। न उन्हें आराम और नही विलास सुहाता था, उन्हें बस कृषि क्षेत्र में नई चीज तलाशने की ललक लगी रहती थी। वे उस दौर के कृषि शोध के भीष्म पितामह थे। चौ० छोटूराम किसानो के उज्जवल भविष्य हेतु लाहौर में खोये हुये रहते थे तो डॉ० रामधन सिंह लायलपुर में दिन रात एक करके कृषि खुशहाली हेतु लगे रहते थे। उस समय चौ० छोटूराम ने नौ सुनहरी कानून बनाकर पंजाब के किसानों को आर्थिक मुक्ति दिलवा दी थी तो डॉ० रामधन सिंह ने गेहूं की नौ–उन्नत किस्मे देकर किसानों के खेतों में सोना उगलवा दिया था। किसान चौ० छोटूराम को किसान मसीहा

का सम्मान देते थे तो डॉ० रामधन सिंह को निक्का छोटूराम खेती मसीहा संबोधित करके नतमस्तक हो जाते थे। वे दो आत्माएं पंजाब खुशहाली की जो इबादत लिख गेहूं – वह पंजाब के इतिहास का एक सुनहरी अध्याय बन गया।

डॉ० रामधन सिंह लायलपुर कालेज के प्रिंसीपल के पद से रिटायर होने के बाद वे सोनीपत में रहते थे। मैं उस समय सी.आर.ए. कालेज सोनीपत में बी.एस.सी. का छात्र था। हमारे भौतिक शास्त्र के प्रोफेसर अक्सर हमें डॉ० रामधन सिंह के बारे में बताते रहते थे। एक दिन मैं उत्साह करके उनसे मिलने चला गया। एक फकीरनुमा विश्वविद्यालय वैज्ञानिक के सामने में नतमस्तक हुआ तथा उन्हें अपना परिचय दिया। साथ में पड़े मूढ़े पर मुझे बैठाया। बाते करने लगे तो उन्होंने मेरे से पूछा – "क्या तुम मेरी क्यूरी के बारे में जानते हो? मैंने उत्तरा दिया – "सर वे वैज्ञानिक थी जिन्होंने रेडीयम की खोज की थी और उनके पति के बारे में? आगे उन्होंने मुझ से पूछा।" "सर वे पैरीक्यूरी थे" मैने जवाब दिया। दोनों में क्या अन्तर था? इसका मैं उत्तर नहीं दे सका। उन्होंने मुझे बताया – "पैरीक्यूरी एक अद्वितीय वैज्ञानिक थे, मेरी क्यूरी नहीं। परन्तु मेरी में कुछ खोजने का जनून था और इस धुन के कारण कभी–कभी वह सो नहीं पाती थी। एक दिन रात को उनके दिमाग में कुछ फतूर उठा – मन में कुछ वैज्ञानिक संघर्ष चल रहा था। बिस्तर से उठकर रात को वह प्रयोगशाला में जा पहुंची और उन्होंने नया पा लिया – रेडीयम खोज निकाला। यदि तुम्हारे जैसे युवकों में यही भावना का प्रवाह हो जाये तो तुम भी एक नई वैज्ञानिक खोज के दावेदार हो सकते हो।"

एक दिन और जब मैं उनसे मिला तो वे पूछने लगे – "गांव में बिलांघियां लाठियां, बासियां लोगों की बाबत बुजुर्गो को कभी बाते करते सुना है?" "सुना तो है, सर। पर कुछ अटपटा लगता हैं।" वे बोले ""बेटे! यह ब्रह्मांड़ बहुआकारीय तथा विशालमय है। बुजुर्गो की बातो मे दम है।–इस प्रकार की मानव जातियां हैं, खोज करना शुरू कीजिये शायद तुम्हें कामयाबी मिल जाये।" कुछ महीने हुये मैं अमेरिका गया था वहां मैंने न्यूर्याक विश्वविद्यालय के भौतिकी शास्त्र के एक प्रोफेसर द्वारा लिखित पुस्तक पढ़ी थी और उन्होंने मानव की तीन श्रेणियां भिन्न–भिन्न ब्रह्माण्डो में निवास करने की बात को स्वीकारा है। इससे डॉ० रामधन सिंह के Intellectual Domain की जानकारी मिलती है।

जब डॉ० बोरलोग को नोबल पुरस्कार मिला तो वे अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने डॉ रामधन सिंह से सोनीपत मिलने आये थे। सोनीपत के उनके निवास को देखकर वे अति विचलित व दुखी हुये "टूटी छत वाले उनके मकान को देखकर कहने लगे कि विश्व के महान वैज्ञानिक के लिये यह रहने लायक जगह नहीं है। ऐसी परिस्थितियां भी डॉ० रामधन सिंह की शोधधुन को विचलित न कर सकी – 1947 में रिटायर होने के बाद भी वे शोध में लगे रहे। उनकी अन्तिम गेहू की उन्नत किस्म–सी 285, सन् 1960 में जारी हुई और यह किस्म लोगों में बहुत लोकप्रिय हुई। जब किसान हुक्के पर बैठकर गेहूं की बुआई के समय आपस में विचार विमर्श करते थे तो सभी किसान एकमत हो जाते थे – "हम तै 85 बोआंगे" इससे एक निष्कर्ष निकलता है, भले ही देश में कृषि शोध का वातावरण न बना हो तथा वैज्ञानिको के योगदान की मान्यता न हो पाई हो, परन्तु कृषि समुदाय डॉ० रामधन सिंह का हमेशा कृतज्ञ रहेगा तथा उन्हें अन्तः करण से सम्मान देता रहेगा।

डॉ० रामधन सिंह तो अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में भी असाधारण लेखन कर गये। उन्होंने तीन पुस्तकों को लिखने का काम पूरा किया। पहली पुस्तक थी – 'जडोकाशब्दकोष', दूसरी पुस्तक 'जाटू भाषा का शब्दकोष' तथा तीसरी पुस्तक 'जाट कौम की सम्पूर्ण सूची' थी। इन तीनों पुस्तकों के छपवाने हेतु उनका एक प्रकाशक से अनुबंध भी हो गया था। परन्तु अकस्मात चल बसे। इसके पश्चात इन पुस्तको के मसौदो को उनके निवास से कौन ले भागा पता नहीं। हॉ उनकी पहली पुस्तक 'जडो का शब्दकोष को किसी ने वाराणसी से छपवा दिया। बाकि दो पुस्तके हमें नसीब नहीं हो पाई।

मुझे उस समय बहुत दुख होता था कि सोनीपत की किसी भी संस्था में अथवा अन्यत्र इस बात का अहसास ही न हो कि इस टाउन में एक विश्व विख्यात वैज्ञानिक हस्ती निवास करते हैं। मैं अभी–अभी की अपनी अमेरिका यात्रा में प्रिंसटन विश्वविद्यालय देखने गया था जहां आईस्टाईन पढ़ाते थे, उसी टाउन में उनका निवास स्थान है जो उनकी स्मशति को समर्पित हैं। आपको कभी आभास भी न होगा कि लोई की धरती (डॉ० रामधन सिंह की जन्मभूमि) पर कभी एक विश्व विख्यात वैज्ञानिक अवतरित हुये थे और न ही उस देहली को आप पहचान पाओगे जहां कभी एक दिव्य शीशू ने किसान को नव जीवन देने हेतु जन्म लिया था। इससे बड़ी और हमारे लिये पीड़ादायक बात नहीं हो सकती। यही माजरा गढ़ी सांपला के उस धर (जहां चौ० छोटूराम ने जन्म लिया था) का है जहां किसान मसीहा अवतरित हुये थे।

किसान ट्रैजेडी एक लम्बी दास्तान है। भारतीय कृषि आयोग–1929 ने इस हकीकत को सरकारी दस्तावेज बनाया था – "भारत का किसान कर्जे में पैदा होता है, कर्ज की मार को सहते–सहते इस जहां से रूकसत कर जाता है और अपने कर्जे का बोझ अपने परिवार को दे जाता है।" सौ साल होने को हैं इस दस्तावेज को लिखे पर किसान को अब तक कोई राहत नहीं मिली है। बेबस किसान आज भी खेत के डोले पर बैठ सूने आकाश की ओर देखता है, निराशा के बादल उसे दिखाई देते हैं और उसकी आंखों से दुख भरे आंसू धरती मां पर जा गिरते हैं, अनायास वह खेत के खू में लूढक जाता है और उसके भारी कंठ से साथी के लिये करूणामय स्वर निकलते हैं – "भाई रै! प्यार करणियां (चौ० छोटूराम व चौ० रामधन सिंह) मर गये।"

पल्ला-झाड़ संस्कृति और हम

– पी. के. मलिक

किसी समाज–पंथ–देश का दुनियां पर वर्चस्व इसी बात से निर्धारित होता है कि वहां लिंग–भेद किस स्तर का है। कोई मुझे पश्चिम में बैठा होने के कारण कितना ही कोसे और इल्जाम लगाए कि मुझपे पाश्चात्य सभ्यता का असर बोल रहा है, लेकिन यह पाश्चात्य सभ्यता का वो वाला असर तो कदापि नहीं है जिसके कारण भारतीय और भारतीयता अपने यहाँ पनपने वाली नई–नई बुराइयों की जड़ें उनकी अपनी संस्कृति और दोगलेपन में ढूँढने के बजाय पाश्चात्य सभ्यता पे लांछन लगा ष्पल्ला झाड़ ष लेती है।

अपितु यह वो असर है जिसने अंग्रेजों, फ्रांसीसियों और लगभग हर यूरोपीय देश की धरती के हर कोने तक शौर्य पताका लहराई है। फिर चाहे उसमें अंग्रेजों द्वारा 200 साल तक भारत–अमेरिका समेत 72 राष्ट्रमंडल देशों पर राज करने की कहानी रही हो, चाहे फ्रांसीसियों द्वारा कनाडा से ले दक्षिण–अफ्रीका और मिडिल ईस्ट पे राज करने की या फिर स्पेनिशों द्वारा ब्राजील–अर्जेंटीना से ले लगभग सम्पूर्ण दक्षिण अमेरिका पर राज करने की कहानी रही हो।

जब गहनता से अध्ययन करता हूँ तो पाता हूँ कि ये सब ऐसा इसलिए कर पाए क्योंकि इन्होनें लिंग–समानता को सदियों पहले से सुलझा रखा है। हालाँकि ऐसा नहीं कि इनका समाज लिंग–समानता के बारे एक आदर्श समाज है, परन्तु हाँ विश्व का सबसे सर्वश्रेष्ठ समाज जरूर है। ऐसे में मुझे भारतीय संस्ृत साहित्य का वो श्लोक याद आता है जो कहता है कि 'यत्र नारी पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता'। हमारे समाज में तो कोई–कोई घर ऐसा मिलता है जहां नारी को बराबरी पे रखा पाया जाता है, पर इन पश्चिम वालों के यहाँ कोई–कोई घर ही ऐसा मिलेगा जहां नारी को बराबरी पे ना रखा गया हो और किसी समाज का लिंग–भेद जितना शून्य तक पहुंचा होता है वहाँ सभ्यताएं स्वतः बाहर के संसार को जानने के लिए उत्सुक रहती हैं वो अपने समाज से बाहर जा के विश्व–सभ्यता को पढ़ती हैं और कब्जे में लेने की सोचती हैं और वो ऐसा इसलिए कर पाते हैं क्योंकि वो अपनी अंतर–गृह विवादों को सुलझा चुके होते हैं। तभी तो कहीं कोलम्बस भारत की खोज में निकलता है तो अमेरिका खोज डालता है, कहीं वास्कोडिगामा भारत ढून्ढ देता है तो कहीं फाहयान और ह्यून–सांग चीन से निकल भारतीय सभ्यता और समाज पढ़ता नजर आता है। मुझे भारतीय समाज (जम्बू–द्वीप वाला भारत जो कि सुदूर इंडोनेशिया से ले अफगानिस्तान तक हुआ करता था) से इनके समकक्ष कोई भी ऐसा भारतीय नहीं मिलता जिसने उस काल में ऐसे विश्वभ्रमण किया हो। फिर यूरोपियन की तरह विश्व में राज करना तो दूर की बात है।

और इसे असफलता कहिये या पिछड़ापन इसका सीधा–सीधा नाता जाता है हमारी विचारधारा से, हमारे समाज की सरंचना से, उसमें औरत से व्यवहार यानी लिंग–भेद किस स्तर का है और इन्हीं के इर्द–गिर्द बनती है सभ्यताओं की सोच और विकास और जब इन पहलुओं को सामने रख भारतीय समाज को पढ़ा जाता है तो समस्या दोगुनी जटिल हो जाती है। एक तो लिंग–भेद चरम–सीमा का और दूसरा उसपे समाज के अंतर्गत जाति–वर्ण–व्यवस्था की भू–गर्भ सी काली खाई। मैं यह नहीं कहना चाहता कि यूरोपियन में कभी रंग–नश्ल भेद के नाम पर मतभेद या झगड़े नहीं हुए, हुए परन्तु वो स्थाई कभी नहीं रहे। जैसे कि हिटलर–मुसोलिनी का किस्सा जिसको की यहूदियों के खिलाफ घृणा से जुड़ा हुआ पाया जाता है लेकिन वो चला कितने दिन? तुरंत ही खत्म कर दिया गया उसको।

लेकिन भारतीय समाज में इसका ना तो भूतकाल में कोई अंत था, ना वर्तमान में और जैसी आज की भारतीय राजनीती हो चली है उसको देखते हुए इसका सुदूर भविष्य में भी कोई अंत नहीं दीखताद्य वस्तुतरू भूतकाल में तो यह चरमसीमा की थी। विश्व में भारत की संस्कृति को छोड़ शायद ही कोई ऐसी संस्कृति हो जो अपने ही समाज में से गुलाम चुनने या उनपे गुलामी मढ़ने की परम्परा रखती हो और विरोध करने का भी अधिकार ना देती हो। मैंने अंग्रेजों को देखा भारतियों को गुलाम बनाते, मैंने फ्रांसीसियों को देखा दक्षिण अफ्रीका के काले लोगों को गुलाम बनाते लेकिन ऐसे भारतीय सिर्फ भारत में ही हैं जिन्होनें अपने ही समाज में गुलाम बनाने की परम्परा आगे बढाई। मैंने कभी एक अंग्रेज को दूसरे अंग्रेज से गैर करवाते नहीं देखा, ना रांसिसी को देखा जबकि भारतीयता में तो वर्ण और जाति व्यवस्था का उद्देश्य ही यह रहा है।

अद्भुत सभ्यता है हमारी जिसमें दूसरे को गुलाम बनाने की पिपासा शांत करने के लिए दूसरे देशों पर आक्रमण करने की कभी जरूरत नहीं हुई और अपना चेहरा उजला दिखाने के लिए प्रचार करते आये और अभी भी करते हैं कि ष्भारतीय शांतिप्रिय और जियो और जीने दो के सिधांत पर यकीनष करते हैं। जबकि कटु सत्य यह है कि ऐसे वाक्य सिर्फ अपनों के आगे सफाई देने के लिए घड़े गए, विदेशी तो इनको हास्यास्पद कहते हैं। हमारी सभ्यता के वाहकों ने कभी राजा–महाराजाओं को इस स्तर का ना ज्ञान दिया ना उनमें पनपने दिया कि वो भी सिकन्दर या नेपोलियन की तरह विश्व–विजय पर निकलतेद्य क्योंकि उनको गुलाम उनकी सभ्यता के जरिये बने–बनाये ही मिलते थे। ठीक वैसे ही जैसे आज कुछ राजनैतिक घरानों को मिल रहे हैं।

दरअसल उनका ज्ञान इसी स्तर का होता था कि राजा उनकी वाह–वाही करे और राज करे, जैसे उनको डर रहा हो कि कहीं उनकी शिक्षा से राजा विश्वविजय पर निकल गया और जीत गया तो वो उनके हाथ से निकल जायेगा। इसलिए राजा को घर में बैठे ही स्वयं को सर्वश्रेष्ठ महसूस करवाने को जातीय और वर्ण–व्यवस्थाएं खड़ी करवा दी गई। यह डरने और डराने का चरित्र

हमारी सभ्यता को विश्व की एनी सभ्यताओं से कोशों पीछे धकेल देता है, दब्बू बनने की प्रवृति पैदा करता है।

क्या अपने घर में घुस के आये दुश्मन को घर से निकालना या दुश्मन से घर छुड़वाना विजय कहलाएगी? लेकिन हमारी सभ्यता ने सिखाया कि घर से दुश्मन को निकालना भी आपकी विजय है। और इसी सभ्यता का असर 1999 के कारगिल युद्ध में भी नजर आया जब पाकिस्तान की घर–घुसपैठ से कारगिल को खाली करवाया गया। क्या भारत ने पाकिस्तान का कोई हिस्सा जब्त किया या इस बात की भरपाई तक भी करवाई कि तुम्हारी घुसपैठ से जो हमारा सैन्य–संसाधन व आर्थिक नुकसान हुआ उसकी भरपाई करो या फिर उसपे शांति–समझौता उलंघन के तहत वसूली की गई? इनमें से कुछ भी नहीं हुआ और हमारी चिरपरिचित सभ्यता के अंदाज में कह दिया गया कि हमने कारगिल फतेह कर लिया।

अगर कारगिल की कहानी को अंग्रेजों या फ्रांसीसियों की नजर से देखें तो वो कहेंगे कि कारगिल फतेह तब होती जब फतेह से पहले कारगिल पाकिस्तान का हिस्सा होता और उसको भारत ने अपने में मिलाया होता अन्यथा पहले से जो भारत का हिस्सा था उससे दुश्मन को भगाने में कारगिल फतेह कैसे हुआ वो तो मुक्त करवाना हुआ। और यही फर्क है भारतीय और यूरोपियन सभ्यता में जिसके कारण यूरोपीयनों ने विश्व पर राज किया और हम उनके समेत मिडिल ईस्ट वालों के भी गुलाम बने।

और जब तक हमारी सभ्यता के संरक्षक–संवाहक–वाहक–प्रवर्तक ऐसी प्रवृति के लोग रहेंगे हम विश्व में वो रूतबा नहीं पा सकते जो यूरोपियनों के पास है। और ऐसा भी नहीं है कि हम ऐसा नहीं कर सकते, कर सकते हैं जैसे अमेरिका ने किया। अमेरिका कर गया तो आज राष्ट्रमंडल की सूची से बाहर हो गया, जबकि हम आज भी उसी सूची में खड़े हैं और यह सब इसलिए क्योंकि हमारी संस्कृति समस्या निवारक व नाशक नहीं अपितु पल्ला झाड़क है। यह तो हुई जाति और वर्ण भेद की बात, अब वो बात जिसको करने से आपको दैवीय व प्रेरणात्मक शक्ति मिलती है और वो है नारी के प्रति लिंग–भेद को शून्य करने की बात।

मोटा–मोटा फर्क यही है कि यूरोपियन औरत को वस्तु, सम्पत्ति व भोग्या नहीं समझते परन्तु इज्जत जरूर समझते हैं। और ये लोग युद्ध भी इज्जत के लिए ही करते हैं आधिपत्य के लिए नहीं, और इसके ही लिए इनके 'ट्रॉय' जैसे युद्ध विश्वविख्यात हैं। औरत को ले के चिंतित ये भी रहते हैं परन्तु सिर्फ उस हद तक जिस हद तक औरत असुरक्षित महसूस करे। जैसे ही औरत सुरक्षा के दायरे में आती है तो ये उससे बेफिक्र हो जाते हैं। फिर ये उसको स्वतंत्र छोड़ देते हैं।

जबकि हमारे यहाँ वैसे तो हर रंग–नश्ल–वर्ण सम्प्रदाय गुलामी के दौर के चलते सब भेद मिटा एक होने की कशमकश दिखाते रहे लेकिन जैसे ही आजादी पास आई ष्वही ढाक के तीन पातष्ठ जैसे ही 1947 में आजादी मिली फिर से वही किस्से शुरू जिसकी वजह से देश गुलाम हुआ था। उसी सदियों पुरानी सभ्यता के वाहक फिर से सक्रिय हो गए और आज फिर से वही झूठ के पुलिंदों वाले नारी की सुरक्षा के प्रपंच घड़ने शुरू कर दिए। थोड़ा बहुत कुछ समाजों ने इस एकता को संभल के रखा हुआ था लेकिन सितम्बर 2013 में हुए मुजफरनगर के दंगों के बाद तो वो भी खत्म हो गई सी प्रतीत होती है।

यानी वही पुरानी संस्कृति फिर से करवट ले रही है समाज को अपनी गिरत में जकड़ने को और हम, जिनको कि आगे बढ़ के इन पुरानी जकड़नों से बाहर आना चाहिए, फिर से इस नूरा–कुश्ती शैली वाली 'पल्ला झाड़ सभ्यता' पे सवार हो लिए हैं। हमें यह समझना होगा कि अगर आज भारत पे वित्तीय (आर्थिक) संकट से ले सामाजिक द्वेष, जमाखोरी से ले भ्रष्टाचार, औरत पे आपराधिकता से ले राजनैतिक गुलामी हावी होती जा रही है तो किसी पाश्चात्य सभ्यता के बढ़ते प्रभाव के चलते नहीं अपितु हमारी इसी 'पल्ला झाड़' संस्कृति के फिर से मुखर होने के कारण देश में कहीं भी बलात्कार हो जाए या छेड़खानी की घटना, हमारे लिए उस समस्या का जड़ से निवारण मान्य नहीं रखता अपितु उसमें भी अपनी साफगोई कैसे ढूँढी जाए वो प्रपंच जरूरी होता है। कहीं बाबा–संत लोग इसमें पाश्चात्यता का असर ढूँढने लग जाते हैं तो कहीं फिल्मों वाले इसको समाज की संकीर्ण सोच पे मढ़ते नजर आते हैं, कहीं धर्म वाले इसमें साम्प्रदायिकता ढूँढने लग जाते हैं तो कहीं डेमोक्रेट कहलाने वाले समाज की रूढ़िवादिता पे ऊँगली ताने मिलते हैं, कोई इसमें कम कपड़ों और फैशन की वजह बता इसका पोस्टमोर्टम करता नजर आता है तो कहीं सरकारें यही ढूँढने में रह जाती है कि इसके लिए कौनसा विभाग या अधिकारी जिम्मेदार है, कोई पैतृक सत्ता पे चढ़ा डोलता है तो कोई नारी की अज्ञानता का रूदन करता है, जबकि समस्या सारी हमारी सभ्यता के मूल सिद्धांतों में है जो औरत को सिर्फ निर्देशित करती हैं सुरक्षित नहीं। औरत को सिर्फ फर्ज बताती हैं अधिकार नहीं। औरत को सिर्फ देवी कहती हैं इंसान नहीं, औरत से सिर्फ त्याग मांगती है, स्वाभिमान नहीं, और औरत को द्वितीय दर्जे पर रख कर खुद को स्वाभिमानी होने का अहंकारी दम्भ जब तक हमारी सभ्यता भरती रहेगी हमारे यहाँ कभी देवताओं का वास नहीं होगाय भारत यूरोपियनों की तरह स्वाभिमानी नहीं बन पायेगा और यही वो चीजें हैं जिनके हल यूरोपियन सदियों पहले निकाल चुके हैं, इसीलिए तब से ले आज भी विश्व पर उन्हीं की चलती है। उनकी इसलिए नहीं चलती कि उनके पास पैसा है, संसाधन है, व्यापार है, ताकत है या रूतबा है अपितु इसलिए चलती है क्योंकि उनके पास पैसा–संसाधन–व्यापर–ताकत–रूतबा पाने का जज्बा पैदा करने का सूत्र है जो कि इनकी इन सब उपलब्धियों की जड़ों में वास करता है और वो है अपनी नारियों को लिंग–भेद शून्यता देना और सवधर्मियों में रंग–वर्ण भेद ना करना।

आप पानी के ऊपर तैर रहे जिस आइसबर्ग की चोटी देखकर विश्मित हैं मैंने उसकी पानी के नीचे की गहराई इस लेख में नापने, देखने और दिखाने की कोशिश करी है, मैं इस प्रयास में कितना

सफल हुआ यह आप निर्धारित करें। हाँ अंत में एक बात और जरूर कहूँगा कि सभ्यताएं सामाजिक परिस्थितियों के साथ–साथ प्राकृतिक व भौगोलिक परिस्थितियों के हिसाब से बना करती हैं। मैंने इस लेख में सिर्फ सामाजिक परिस्थितियों का वर्णन किया है। भविष्य का पूरा खाका क्या हो उसके लिए प्रा.तिक व भौगोलिक परिस्थितियाँ भी परिदृय में रखनी होंगी और ये परिस्थितियाँ कहती हैं कि कोई भी दो सभ्यताएं एक जैसी नहीं हो सकती परन्तु उनमें लिंग–भेद व नश्ल–वर्ण भेद शून्य जरूर हो सकता है। इसलिए इस लेख से अपनी सभ्यता की समस्याओं के समाधान के रास्ते तो निकाले जा सकते हैं। परन्तु अंतरूपुर की मंजिल मिलेगी आपके अंतरूमन में ही।

निष्कर्ष ये है कि बांटों और राज करो की नीति के तहत हम गुलाम नहीं किये गए थे अपितु बांटों और राज करो की नीति हमारे यहाँ पहले से विद्यमान थी इसलिए हम गुलाम हुए थे। हम बंटे हुए थे जाति के नाम पर, हम बंटे हुए थे नश्ल–वर्ण के नाम पर और सबसे घातक हम बंटे हुए थे लिंग के नाम पर। जो कि आज भी बदस्तूर जारी है।

दानवीर सेठ शिरोमणी चौधरी छाजूराम लांबा

दानवीर सेठ चौधरी छाजूराम लांबा के पूर्वज झूंझनू (राजस्थान) के निकटवर्ती गांव गोठड़ा से आकर भिवानी जिले के ढ़ाणी माहू गांव में बसे थे। इनके दादा चौधरी मणीराम ढ़ाणी माहू को छोडकर सरसा में जा बसे। लेकिन कुछ दिनों के बाद इनके पिता चौ. सालिगराम सन् 1860 में भिवानी जिले के अलखपुरा गांव में बस गए थे। यहीं पर चौधरी छाजूराम का जन्म सन 1861 में हुआ था। गांव अलखपुरा में आने पर इनका परिवार पूर्णतया खेतीबाड़ी पर निर्भर रहकर बड़ी कठिनाई से गुजर बसर कर रहा था चौधरी छाजूराम ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा बवानीखेड़ा के स्कूल से प्रात की। मिडल शिक्षा भिवानी से पास करने के बाद उन्होंने रेवाड़ी से मैट्रिक की परीक्षा पास की। मेधावी छात्र होने के कारण इनको स्कूल में छात्रवृतियां मिलती रहीं लेकिन परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण आगे की शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाए। इनकी संस्क्रृत, अंग्रेजी, महाजनी, हिंदी और उर्दू भाषाओं पर बहुत अच्छी पकड़ थी। लेकिन फिर भी रोजगार की तलाश में लगे रहे। उस समय भिवानी में एक बंगाली इंजीनियर एसएन रॉय साहब रहते थे, जिन्होंने अपने बच्चों की ट्यूशन पढ़ाने के लिए चौधरी छाजूराम को एक रूपया प्रति माह वेतन के हिसाब से रख लिया। जब सन् 1883 में ये बंगाली इंजीनियर अपने घर कलकत्ता चले गए तो बाद में चौधरी छाजूराम को भी कलकत्ता बुला लिया। जिस पर इन्होंने इधर–उधर से कलकत्ता के लिए किराए का जुगाड़ किया तथा इंजीनियर साहब के घर पहुंच गए। बहां भी उसी प्रकार से उनके बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने लगे। साथ–साथ कलकत्ता में मारबाड़ी सेठों के पास आना–जाना शुरू हो गया, जिन्हें अंग्रेजी भाषा का बहुत कम ज्ञान था। लेकिन चौधरी छाजूराम ने उनकी व्यापार संबंधी अंग्रेजी चिट्टियों के आदान–प्रदान में सहायता शुरू की, जिस पर मारवाड़ी सेठों ने इसके लिए मेहनताना देना शुरू कर दिया। कुछ ही दिनों में चौधरी छाजूराम मारवाड़ी समाज में एक गुणी मुंशी तथा कुशल मास्टर के नाम से विख्यात हो गए। इसी दौरान व्यापारी पत्र व्यवहार के कारण उन्होंने व्यापार संबंधी कुछ गुर भी सीख लिए जो उन्हें उस समय के एक महान व्यापारी बनाने में सहायक सिद्ध हुए। कुछ समय बाद उन्होंने बारदाना(पुरानी बोरियों) का एक छोटा सा व्यापार शुरू कर दिया। यह पुरानी बोरियों का क्रय विक्रय उनके लिए एक वरदान साबित हुआ, जिसके लाभ से उन्होंने धीरे–धीरे कलकत्ता में कंपनियों के शेयर खरीदने शुरू कर दिया परिणाम स्वरूप उनकी गिनती भी व्यापारियों में होने लगी। ऐसा करते–करते एक दिन उन्होंने अपनी लग्न, परिश्रम व बुद्धि बल से कलकत्ता का जूट का व्यापार पूर्ण रूप से अपने हाथ में ले लिया और वह दिन आ गया जब लोग उन्हें जूट का बादशाह (जूट किंग) कहने लगे। और इसी कारण चौधरी छाजूराम को लोग एक सेठ की हैसियत से करोड़पतियों में जानने लगे। कलकत्ता की 24 बड़ी विदेशी कंपनियों के यह सबसे बड़े शेयर होल्डर थे। कुछ ही समय में वे 12 कंपनियों के निदेशक बन गए। उस समय इन कंपनियों से 16 लाख प्रति माह के हिसाब से लाभांश प्राप्त हो रहा था। इसलिए पंजाब नेशनल बैंक ने इनको अपना निदेशक रख लिया परंतु काम की अधिकता होने के कारण कुछ समय के बाद इन्होंने त्यागपत्र दे दिया। 24 कंपनियों के 75 प्रतिशत हिस्से सेठ चौधरी छाजूराम के थे और इनका करोड़ों रूपया बैंक में जमा था। याद रहे ये सेठ घनश्याम दास बिड़ला के घनिष्ट पारीवारिक मित्र थे और पीछे से राजस्थानी संबंध होने के कारण श्री बिड़ला के बच्चे इन्हें नाना कहा करते थे। एक समय आ गया, जब सेठ छाजूराम की कलकत्ता में छह शानदार कोठियां थीं। इसके अलावा उन्होंने अलखपुरा व हांसी के पास शेखपुरा में भी दो शानदार महलनुमा कोठियां बनवाईं। गांव शेखपुरा, अलीपुर, कुम्हारों की ढ़ाणी, कागसर, मोठ, जामणी व अलखपुरा गांव में इनकी कई हजारों बीघा जमीन थी। पंजाब के खन्ना में रूई तथा मूंगफली का तेल निकालने के कारखाने थे। इन्होंने रोहतक में चौधरी छोटूराम के लिए नीली कोठी का निर्माण किया जो आज भी रोहतक के बीचों बीच उसी रंग में खड़ी है, जो वर्तमान में चौधरी बीरेंद्र सिंह डूमरखां के अधिकार में है। याद रहे, चौधरी छोटूराम को एफ.ए. के बाद शिक्षा दिलाने वाले चौधरी छाजूराम ही थे, जिसका संक्षेप में अर्थ है कि सेठ छाजूराम नहीं होते तो चौधरी छोटूराम दीनबंधु नहीं होते और यदि दीनबंधु नहीं होते तो आज किसानों के पास जमीन भी नहीं होती। यह भी याद रहे कि जब भारत में पहली

बार सन् 1913 में रोल्स रायस कार आई तो चंद राजाओं को छोडकुर कलकत्ता में पहली कार उनके बड़े सुपुत्र सज्जन कुमार ही लाए थे, जिसकी कीमत उस समय एक लाख रूपए थी। सेठ छाजूराम का विवाह बाल्यावस्था में डोहका गांव जिला भिवानी में हुआ था लेकिन विवाह के कुछ समय बाद ही इनकी पत्नी का देहांत हैजे की बीमारी के कारण हो गया।

दूसरा विवाह सन 1890 में भिवानी जिले के ही बिलाबल गांब में रांगी खानदान में हुआ, जो दोनों ही गांव सांगवान खाप में आते हैं। इनके तीन पुत्र हुए, जिसमें सबसे बड़े सज्जन कुमार थे, जिनका युवावस्था में ही स्वर्गवास हो गया। उसके बाद दो लडके महेंद्र कुमार व प्रदुम्र कुमार थे। उनकी बड़ी बेटी सावित्री देवी मेरठ निवासी डॉ. नौनिहाल से ब्याही गई थी। एक पुत्र और एक पुत्री बाल्यावस्था में ही ईश्वर को प्यारे हो गए थे। सेठ चौधरी छाजूराम की दान क्षमता उस समय भारत में अग्रणी थी। कलकत्ता में रविन्द्र नाथ टैगोर के शांति निकेतन विश्वविद्यालय से लाहौर के डीएवी कॉलेज तक उस समय ऐसी कोई संस्था नहीं थी, जिसमें सेठ छाजूराम ने दान न दिया हो। चाहे वह हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस हो, गुरूकुल कांगड़ी हो या फिर रोहतक या हिसार की जाट संस्थाएं। हिसार का वर्तमान जाट कॉलेज व सीएवी स्कूल आदि तो पूर्णतः उन्हीं द्वारा बनवाए गए। इसके अतिरिक्त उन्होंने अनेकों गौशालाएं और गुरूकुल बनवाए। महाराजा भरतपुर के आर्थिक संकट में इन्होंने दो लाख रूपए का अनुदान दिया तो प्रथम विश्वयुद्ध में गांधी जी के कहने पर इन्होंने अंग्रेजों के युद्ध फंड में एक लाख चालीस हजार रूपए का अनुदान दिया। उस समय के लगभग सभी बड़े कांग्रेसी नेताओं को इन्होंने दान दिया था। महात्मा गांधी से लेकर पंडित मोतीलाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस, मदन मोहन मालवीय, जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल, राजगोपालाचार्य, . पलानी, जितेंद्र मोहन सैन गुप्ता तथा श्रीमती नेली सेन गुप्ता आदि दान लेने वालों में शामिल थे। जब एक बार लाला लाजपत राय को कलकत्ता में पैसे की जरूरत पड़ी तो उन्होंने 200 रूपए की मांग सेठ चौधरी छाजूराम से की तो उन्होंने 200 रूपए की बजाय 2000 रूपए उदारतापूर्वक भेज दिए। इसके अतिरिक्त कलकत्ता से लेकर पंजाब के बीच जब भी कोई काल पड़ा, सेठ जी ने दिल खोलकर पशुओं के चारे व इंसानों के अनाज के लिए कई बार योगदान देकर अनेकों जानें बचाई सेठ चौधरी छाजूराम की दान सूची बहुत बड़ी है, जिसको इस लेख में लिख पाना संभव नहीं है। लेकिन सेठ चौधरी छाजूराम अक्सर कहा करते थे। मैं वह काम (व्यापार) कर रहा हूं जो केभी किसी ने मेरी जाति में नहीं किया और जितना भी मैं दान देता हूं ईश्वर मुझे उससे कई गुना बढ़ाकर लौटा देता है। जहां तक भिवानी कस्बे का प्रश्न है, सेठ चौधरी छोजूराम ने वर्ष 1911 में पांच लाख रूपए की लागत से अपनी स्वर्गीय बेटी की यादगार में लेडी हैली हॉस्पीटल बनवाया, जिस जगह पर आज चौधरी बंसीलाल सामान्य अस्पताल खड़ा है। इसी के साथ–साथ उन्होंने भिवानी में एक गौशाला और एक प्राईमरी स्कूल का भी निर्माण करवाया था। आज उसी गौशाला की जमीन पर भिवानी के बीचों–बीच गौशाला मार्केट बनी हुई है और उसी गौशाला की यादगार का एक गेट शेष है, जिस पर सेठ चौधरी छाजूराम व उनके बेटे सज्जन कुमार का नाम अंकित है। जब सन् 1928 में भयंकर अकाल पड़ा तो भिवानी शहर की जनता पानी की एक–एक बूंद के लिए तरस रही थी। जिस पर भिवानी तहसील के तहसीलदार घासीराम, पंडित नेकीराम शर्मा और श्री श्रीदत्त वैद्य कलकत्ता में सेठ छाजूराम के पास पहुंचे और भिवानी की व्यथा बतलाई तो सेठ छाजूराम ने उनको पानी की व्यवस्था के लिए कुएं व बावडियां बनवाने के लिए तीन लाख रूपए दिए। लेकिन आज अफसोस है कि उस महान दानदाता का हिसार को छोडकर कहीं भी स्मारक व मूर्ति नहीं लगी। सेठ छाजूराम केवल दानदाता ही नहीं थे, वे एक महान देशभक्त भी थे। जब 17 दिसंबर, 1928 को भगतसिंह ने अंग्रेज अधिकारी सांडर्स की गोली मारकर हत्या की तो वे दुर्गा भाभी व उनके पुत्र को साथ लेकर पुलिस की आंखों में धूल झोंकते हुए रेलगाड़ी द्वारा लाहौर से कलकत्ता पहुंचे और कलकत्ता के रेलवे स्टेशन से सीधे सेठ छाजूराम की कोठी पर पहुंचे, जहां सेठ साहब की धर्मपत्नी वीरांगना लक्ष्मीदेवी ने उनका स्वागत किया और एक सप्ताह तक अपने हाथ से बना हुआ खाना खिलाया। उसके बाद दुर्गा भाभी अपने बच्चे को लेकर कहीं और चली गई, लेकिन भगतसिंह लगभग ढ़ाई महीने तक उसी कोठी की ऊपरी मंजिल पर रहे, जो उस समय ऐसी कल्पना करना भी संभव नहीं था। इससे स्पष्ट है कि वे एक महान देशभक्त भी थे(पुस्तक अमर शहीद भगत सिंह, लेखक विष्णु प्रभाकर)। इसमें कोई भी अंदेशा नहीं कि जो पांच हजार रूपए नेताजी सुभाष ने चौधरी साहब से कलकत्ता में चंदे के तौर पर लिए थे, उनका इस्तेमाल उन्होंने भारत से जर्मनी तथा बाद में जर्मनी से जापान जाने के लिए किया अर्थात ये पैसा देश की आजादी के लिए खर्च किया, जो एक और महानतम योगदान था।

याद रहे, सेठ चौधरी छाजूराम चौधरी छोटूराम के कहने पर संयुक्त पंजाब में सन् 1927 में एम.एल.सी भी रहे लेकिन उनका मन कभी राजनीति में नहीं लगा। यह विवरण देना भी उचित होगा कि घासीराम सन् 1927 से 1932 तक पांच साल तक भिवानी के तहसीलदार रहे। इन्हीं के काल में उस समय भिवानी में जितने भी कार्य हुए, सभी इन्हीं की देख–रेख में हुए थे, जिसके लिए बाद में घासीराम को राय बहादुर का खिताब दिया गया, जो वर्तमान में झज्जर जिले के छुडानी गांव से धनखड़ गौत्री जाट थे। वर्तमान में उनके एक पौत्र मेजर जनरल राजेश्वर सिंह मिजोरम में तैनात हैं। राय बहादुर चौधरी घासीराम धनखड़ जी की यादगार को भी चौधरी छाजूराम की प्रतिमा के साथ अंकित किया जाएगा। सेठ छाजूराम का जीवन पूर्णतया आदर्शवादी, निष्कलंक, प्रेरक और अति श्रेष्ठ था तथा उनके जीवन से हमें यही प्रेरणा मिलती है कि जननी जने तो भक्तजन, या दाता या शूर। नहीं तो जननी बांझ रहे, काहे गंवाए नूर।

साभार 'जाट महान'

Remembering Neta Ji Subhash Chandra Bose

- R.N.Malik

Birth Anniversary of Subhash Chandra Bose falls on 23rd January. Subhash Bose was a very brilliant person. He got fourth position in ICS just with a preparation of 8 months whereas other students used to prepare for two years in Cambridge or Oxford. In the English Essay paper, he stood first. In those days, students had to go to England to appear in the examination. E.N.Mangat Rai and Ian Fletcher also were ICS officers and were probably of 1924 batch. E.N.Mangat Rai was Chief Secretary of Panjab at the age of 42 years. Neta Ji was also prescient of the world events. He made C.R.Das as his political Guru. C.R. Dass , was also called Deshbandhu Chita Ranjan Dass. He had a legal practice of Rs.50000 per month in those days but left the practice at the invitation of Mahatma Gandhi in 1920. Unfortunately, C.R.Dass died in June 1925. Subhash was in jail at Mandalay at that time.. His pain at the death of his Guru was unbearable. After his release from jail, Congress party gave him a lot. He became the President of Bengal Congress pary and General Secretary of Congress at a very young age. But he could not navigate his political journey correctly in the absence of his Guru C.R. Dass. His elder brother Sarat Chander Bose was a very talented person. He too had a legal practice of Rs. 50000 per month in those days. But unfortunately, he did not perform the role of a Guru but remained an indulgent elder brother.

Problem with Subhash was that he was always in haste and also became a victim of intellectual arrogance. He took avoidable risks and suffered a lot. His constant problem was his problem with lungs and could not bear jail life. He unnecessaryly made very disparaging remarks against all the Congress leaders and called them intellectually below poverty line in his book in 1934. He called Kasturba Gandhi Ji as Mrs. Gandhi and mother of Jawaharlal as Mrs.Motilal. Sardar Patel never forgave him thereafter. Still Gandhi Ji overruled Sardar Patel and made Subhash the Congress President for the year 1938. Still Sardar Patel gave him the highest respect when he made unforgettable arrangements in the annual session in Gujrat. Subhash did not say a word in praise of the great Sardar. To stand for the election of Congress President second time was the mistake of Subhash. Fault of Gandhi Ji was not to consult Sarat Bose and work out a compromise. Still Subhash won the election with the support of Jaiparkash Narain. After that the tussel became between Subhash and Sardar Patel. Fault was on both sides. But the treatment the Congress leaders gave to Subhash at Tripuri session was the worst these leaders could do and the attack was shamelessly led by Raja Ji. Gandhi Ji was not present at the session and Nehru remained quiet. Circumstances deteriorated further and Subhash had to leave the Congress. Mistake of Subhash here was that he did not prefer to talk to anybody except Jaaharlal and Gandhi Ji. Fault of Gandhi Ji was that again made no effort to strike a compromise. Gandhi Ji thought that Subhash and Sardar Patel cannot work together. Intellectually, Dr. Rajendra Prassad was as capable as Subhash if not more and Subhash never talked to him. Thereafter gap increased. One Fault of Subhash was that he got himself unnecessarily bogged down with left Vs right controversy. Subhash now came under the influence of M.N.Roy who thoroughly misguided Subhash. Now Arun Shouri has revealed that M.N.Roy took money from British government to scuttle the freedom movement led by Gandhi Ji. Subhash did not know about it. Still CWC invited Subhash as a special invitee in the CWC meeting after England declared war against Germany on 1st September 1939. Thereafter Subhash launched a vitriolic attack on Congress which benefitted the Britishers indirectly.

Subhash's journey to Germany clandestinely was most daring. His further journey to Japan was still more daring. But again he started making mistakes after mistakes. His two mistake were that he did not meet Captain Mohan Singh who was the actual builder of INA and was put in jail by the Japanese. His second mistake was that he played no role in the operational planning of Japanese for attacking India and left everything in the hands of General Mataguchi and Tiruchi and the Japanese and INA attack in March 1944 proved a disaster. Same thing happened again when British Indian forces attacked Burma in December 1944. Finally, Subhash made the mistake of leaving Singapore and did not listen to the advice of Captain Niazi.He did not tell anybody where he wanted to go. Anyhow, the Supreme sacrifices, daring boldness , exuberant nationalism and brilliance should inspire every Indian. He suffered the maximum atrocities at the hands of Britishers. Congress leaders spent many years in jails but they were not subjected to beatings or severe beatings which Subhash had to bear. In the freedom procession on 26th January 1931 in Calcutta, the Indiann constable was swinging his lathi to hit Subhash directly on his head and break it. But fortunately, a gentleman put himself in between and saved the life of Subhash. Even then Subhash was arrested with his body bleeding and sentenced by the heartless judge.

I have given a true assessment of the life of Neta Ji very briefly in a very dispassionate manner. The tassel between Subhash and the top leadership of Congress party proved very unfortunate and both sides were in the wrong. Had Subhash remained at Singapire and not go to Japan or Russia, he would have been the first Prime Minister of India because public always likes dare devil person.

Now both daughter of Subhash and his grand nephew say that if the Prime Minister and the RSS want to revive the memories of Subhash sincerely, then they must promote secularism for which Subhash was an epitome.

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 29.10.89) 33/5'8" B.Com from Punjab University Chandigarh. M.A. Public Administration from M.D.U. Rohtak. Hotel Management ICCA Dubai. MDRT (Medical Device Reprocessing Technician) Vancouver Canada. Canada PR. Presently working in Canada. Father self business. Mother social worker. Avoid Gotras: Ahlawat, Sangwan, Khatri. Cont.: 9463131189
- SM4 Jat Girl (DOB 07.08.93) 29/5'5" B. Com, C.A., Working as C.A in Mohali package Rs. 13 lakh PA. Avoid Gotras: Chahal, Dahiya, Dhankhar. Cont.: 9417301464
- SM4 Jat Girl (DOB 20. 09. 96) 26/5'5" B. Sc. (Hons.) & M.Sc. (Hons) in Geology (Earth Science). Working as Hydrogeologist. Younger brother pursuing MBBS. Father Budge Officer, DSE Panchkula. Family settled at Zirakpur. Avoid Gotras: Ahlawat, Dhatterwal, Hooda. Cont.: 9915783511, 9814885021
- SM4 Jat Girl (DOB 14. 03. 96) 26/5'4" M.Sc. Physics, B.Ed., CTET, HTET passed. Pursuing PhD. From Punjab University Chandigarh. JRF, UNET pass. Father retired Gazette Officer. Avoid Gotras: Nain, Dhanda, Punia. Cont.: 9416121082.
- SM4 Jat Girl (DOB 17. 09. 87) 35/5'6" M.A., M.Sc. (Geology). Working in NGO. Avoid Gotras: Ahlawat, Sangwan. Cont.: 9463837233.
- SM4 Jat Girl (DOB 26.04.94) 28/5'5" B.Sc. Math, M.Sc. Math from Delhi University, B.Ed. Pursuing PhD. (Math) from PEC Chandigarh. Father Pharmacist at CGHS, Delhi. Mother housewife. Avoid Gotras: Dalal, Gulia, Malik. Cont.: 7015953425.
- SM4 Jat Girl (DOB 06.06.94) 28/5'7" B.Com, B.Ed. Father retired from Chandigarh Police. Family settled in Chandigarh. Avoid Gotras: Kadyan, Antil, Sangwan. Cont.: 9888333315, 9877533194
- SM4 Jat Girl (DOB 26.03.96) 26/5'4" Degree in Computer Engineering. Residing in Canada. Avoid Gotras: Nandal, Hooda, Lakra. Cont.: 9915805679.
- SM4 Jat Girl (DOB 05.07.97) 25/5'3" B.Tech. (CCE). Working as Software Engineer in reputed Sales Force MNC with Rs. 22 lakh PA. Father's own business. Mother housewife. Family settled in own house at Kurukshetra. Mother housewife. Avoid Gotras: Nain, Anttal. Cont.: 9416112949.
- SM4 Jat Girl (DOB 26.11.99) 23/5'3" MA Psychology. Pursuing P.G. Diploma in Guidance & Counseling. Father Advocate. Mother housewife. Avoid Gotras: Lather, Hooda, Rathi. Cont.: 9416504138.
- SM4 Jat Girl (DOB 01.01.95) 27/5'2" MSc. (Math), B.Ed. HTET, TGT, CET qualified. Father Superintendent in Haryana Government. Preferred Tri-city match. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Beniwal, Dhillon, Nehra. Cont.: 9466442048
- SM4 Jat Girl (DOB 20.11.99) 23/5'3" B.A,. Working as Clerk (Contractual) in Government Department Panchkula. Avoid Gotras: Ravish, Kundu, Lamba. Cont.: 9467588051
- SM4 Jat Girl (DOB 11.09.95) 27/5'5" B.Sc. Nursing, MA Public Administration. Working in PGI Chandigarh as Nursing Officer. Brother working in Reliance Company Cyber Security Eng. Office in Pune. Father retired from Haryana Government service. Family settled at Chandigarh. Preferred match from Tri-city. Avoid Gotras: Kaliraman, Pawar, Jani. Cont.: 9416083928.
- SM4 Jat Girl (DOB 14.03.96) 26/5'4" M.Sc. Physics, B.Ed, CTET, Pursuing Ph.D in Physics. NET, JRF passed. Father retired SDO Agriculture. Avoid Gotras: Nain, Dhanda, Punia. Cont.: 9416121082.
- SM4 Jat Girl (DOB 25.10.92) 29/5'4" B.Tech. (Electrical & Communication). Employed in Bel. Company on contract basis. Family settled at Pinjore. Avoid Gotras: Dhayal, Punia, Phogat. Cont.: 9416270513
- SM4 Jat Girl (DOB 08.12.92) 31/5'2" B. A. (Arts.), M.A. (Hindi), HTET, CTET, PTET, PGDCA from Hartron. Employed as Data Entry Operator in Town & Country Planning Department on contract basis. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Siwach, Shehrawat, Maan. Cont.: 9417097248
- SM4 Jat Girl (DOB 13.10.91) 29/5'5" BA, LLB (Hons.), LLM in Criminal Law, Diploma in Labour Law, Diploma in Administrative Law, Ph.D in International law. Employed in Education Department, Haryana. Avoid Gotras: Malik, Deswal. Cont.: 9417333298
- SM4 Jat Boy (DOB 05. 09. 96) 26/5'9" B. Tech from IIT Delhi. Presently working as Software Engineer in Tokya, Japan with salary package about one crore LPA. (Boy can move anywhere after marriage). Younger son also Software Engineer at Banglore with package Rs. 30 lakh PA. Parents retired from Haryana Government as Class-I officer and settled at Panchkula. Avoid Gotras: Khokhar, Gurawalia, Mor. Cont.: 9876221778.
- SM4 Jat Boy (DOB 18. 10. 90) 32/6'1" B. Tech from UIET (Punjab University Chandigarh). Employed as Inspector CBI at Port Blair with salary above Rs. One lakh. Family settled at Zirakpur (Punjab). Preferred match working in State/Central Government. Avoid Gotras: Khasa, Dahiya, Lathwal. Cont.: 9023492179, 7837551934
- SM4 Jat Boy (DOB 06. 11. 98) 24/5' 9" B. Com (Computer). Diploma in Hatron. Own business of mobile repair. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Barak, Dalal, Kadyan. Cont.: 8146229862
- SM4 Jat Boy (DOB 16.07.82) 40/5'9" B.P.E.D. Working as Sports Teacher in private school, Sonepat. Avoid Gotras: Dahiya, Dhankhar. Cont.: 8607150300, 9988853313.
- SM4 Jat Boy (DOB 04.10.95) 27/5'8" B.Tech., MBA. Employed in Hyderabad with package of above Rs. 20.5 lakh PA. Family settled in Panckula. Parents retired pensioners. Avoid Gotras: Sindhu, Rathi, Sharai, Dalal. Cont.: 9872793675
- SM4 Jat Boy (DOB 11.10.98) 24/5'7" Employed as Probationary Officer in SBI. Avoid Gotras: Grewal, Chahal, Dhankhar. Cont.: 9416761353
- SM4 Jat Boy (DOB 10.10.94) 28/5'11" B.Tech. from CJU Hisar. PGDCA, MBA (IT & HR) Employed as Team Leader in Infosis

Mohali. Father Advocate at Jind. Mother teacher retired. Avoid Gotras: Malik, Sheoran, Sindhu. Cont.: 9812157267

- SM4 Jat Boy (DOB 08.06.98) 24/5'11" B.A, LLB (Homs.) LLM (Criminal). Pursing P.G. diploma in forensic science. Working as Advocate. Father Advocate. Mother housewife. Avoid Gotras: Laher, Hooda, Rathi. Cont.: 9416504138
- SM4 Jat Boy (DOB 25.04.93) 29/6 feet. B.Tech. Employed as Assistant Manager in Jai Parvati Forge Limited. Near Derabassi (Punjab). Annual income Rs. Six lakh PA and five acre agriculture land. Father retired from Government job. Mother housewife. Family settled in own house at Zirakpur. Avoid Gotras: Nehra, Dhull, Kadyan. Cont.: 9876602035, 9877996707
- SM4 Jat Boy (DOB 27. 04. 89) 33/5'10" B. Tech in Bio-Medical Engineering. Currently working in a reputed Masters' Medical Company with package Rs. 27 lac PA. Father's own business of Medical equipments. Mother housewife. Avoid Gotras: Jattain, Duhan, Dagar. Cont.: 9818724242
- SM4 Jat Boy (DOB Jan. 89) 33/6'1" BA, PGDCA and diploma in Computer Science. Working in private school. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Chahal, Malik, Ghanghas. Cont.: 9896840403.
- SM4 Jat Boy (DOB 20.11.96) 26/5'7" B.A. Working as Stenographer on regular basis in Haryana government Department. Avoid Gotras: Narwal, Kundu, Mann. Cont.: 9315428491, 9417869505
- SM4 Jat Boy (DOB 28.04.96) 26/6'2" Captain in Army. BSC Chemistry from NDA. B. Tech. from CME in Pune. Father's own business of Transport at Chandigarh and Nagpur. Mother housewife. Only child. Avoid Gotras: Dhull, Nehra, Sheoran. Cont.: 9878705529.
- SM4 Jat Boy (DOB 19.03.92) 30/6 feet. B. Tech Mechanical Engineering. Diploma in Sound Engineering. BTEEC Certificate in Music Technology from Point Blank Music School London. Currently working: free lancing. Avoid Gotras: Kajal, Khatkhar, Khatri. Cont.: 9466954276.
- SM4 Widower with two kids Australian Citizen Jat Boy. Age 44 years. B. Tech., Pilot. Well settled in Melbourne, Own multiple business. Parents settled at Panchkula. Avoid Gotras: Nain, Solanki, Dalal. Cont.: 61401377715, 9872044466.
- SM4 Jat Boy 29/5'10" B. Tech. CSE. Working in I.T. Company at Chandigarh. Family settled at Zirakpur (Punjab). Avoid Gotras: Dalal, Kadiyan. Cont.: 8054064580.
- SM4 Jat Boy (DOB 12.06.95) 27/5'5" B. Tech. (Urban & Regional Planning) & M. Plan (Master in Urban Planning) both from Guru Nanak Dev University Amritsar. Employed as Assistant Town Planner (ATP) on contractual basis in Govt. office Haryana. Father Haryana Govt. employee at Chandigarh. Mother working in a reputed private school at Chandigarh. One younger brother (Transport Planner) working as Senior Project Scientist at IIT Delhi. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Bilam, Pannu, Malik. Cont.: 9417838725.
- SM4 Jat Boy (DOB 1986) 36/5'11" L.L.B. & L.L.M. from Kurukshetra University, Ph.D. from Punjab University Chandigarh. Own well established business in Bhiwani. Both parents retired from Government service. Avoid Gotras: Sangwan, Nehra, Legha. Cont.: 9888911945, 0172-560266.
- SM4 Jat Boy (DOB 25.12.94) 27/5'8" BA, LLB from Punjab University Chandigarh. Father HAS class-II (Rtd.). Mother housewife. Own house at Zirakpur (Punjab), Hotel/Show Room/ Income/crore/year. Agriculture land and own house at village. Avoid Gotras: Balyan, Deswal, Pannu. Cont.: 9216886705, 7355555667.
- SM4 Jat Boy (DOB 09.09.97) 24/6 Feet. B. Tech. (Computer Science), MBA. Employed as Software Engineer in Rocket Software, Pune with package of Rs. 16 lakh+ PA. Father retired as Supervisor from HMT Ltd. Pinjore. Mother housewife. Family Business Coaching Institute at Pinjore (Haryana) with Rs. 31 lakh PA. Avoid Gotras: Bankura, Maan. Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Boy (DOB 17. 08. 95) 26/6'1" B. Tech. (CSE). Working as Software Engineer in MNC at Pune with Rs. 15 lakh PA. Father Officer in Agriculture Department Haryana. Family settled in own house at Kurukshetra. Avoid Gotras: Tomar, Teotia. Cont.: 9466262234.

रनवीर पुनिया

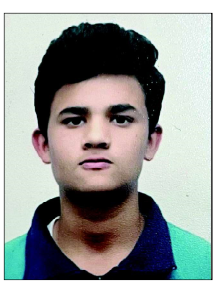

रनवीर पुनिया सुपुत्र श्री विरेंद्र पुनिया क्षेत्रीय अधिकारी हरियाणा प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, युवा पर्यावरणविद के रूप में पर्यावरण सरंक्षण के लिये कार्य कर रहे है। रनवीर ई वेस्ट के रिसाइक्लिंग के लिए काम कर रहा है। रनवीर ने सैकड़ों किलो ई वेस्ट रिसाइक्लिंग फर्म में जमा करवाया है। रनवीर ई वेस्ट से होने वाले दुष्प्रभाओं के बारे में जागरूकता कार्यशाला भी आयोजित करता है। जाट सभा उनके सुनहरे भविष्य की कामना करती है ।

श्रीमती प्रियंका पुनिया

विमन इंडीयन चेम्बर ओफ कामर्स एंड इंडस्ट्री ने पाई अकैडमी पंचकुला की संस्थापक श्रीमती प्रियंका पुनिया धर्मपत्नी श्री विरेंद्र सिंह पुनिया निवासी सेक्टर 21, पंचकुला को यूटी चंडीगढ़ स्टेम एजुकेशन काउन्सिल का प्रेसिडेंट बनाया है। विमन इंडीयन चेम्बर ऑफ कामर्स एंड इंडस्ट्री महिला उधमियों को प्रोत्साहित करने तथा उनके लिए बिजनेस के नए अवसर प्रदान करने वाला राष्ट्रीय स्तर का संगठन है।

आर्थिक अनुदान की अपील

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा 6 जून 2019 को गांव कोटली बाजालान-नोमैई कटरा जम्मु में जी टी रोड़ पर 10 कनाल भूमि की भू-स्वामी श्री संतोष कुमार पुत्र श्री बदरी नाथ निवासी गांव कोटली बाजालान, कटरा, जिला रियासी (जम्मु) के साथ लंबी अवधि के लिए लीज डीड पंजीकृत की गई है। इस भूमि का इंतकाल भी 6 जुलाई 2019 को जाट सभा चंडीगढ़ के नाम दर्ज हो गया है। इस प्रकार इस भूमि पर जाट सभा चंडीगढ़ का पूर्ण स्वामीत्व स्थापित हो चुका है। बिल्डिंग के मजबूत ढ़ांचे/निर्माण के लिये साईट से मिट्टी परीक्षण करवा लिया गया है और बिल्डिंग के नक्शे/ड्राईंग पास करवाने के लिये सम्बन्धित विभाग में जमा करवा दिये गये है। इसके अलावा जम्मु प्रशासन व माता वैष्णों देवी साईन बोर्ड कटरा को यात्री निवास साईट पर जरूरी मूल भूत सार्वजनिक सेवायें - छोटे बस स्टैड़, टू-व्हीलर सैल्टर, सार्वजनिक शौचालय, वासरूम, पीने के पानी का स्टाल आदि के निर्माण हेतु पत्र लिखकर निवेदन किया गया है। यात्री निवास स्थल पर ब्लॉक विकास एवं पंचायत अधिकारी (बी.डी.पी.ओ.) कटरा द्वारा सरकारी खर्चे से दो महिला एवं पुरूष स्नानघर व शौचालय का निर्माण किया जा चुका है।

यात्री निवास भवन का शिलान्यास व दीन बंधु चौधरी छोटू राम की विशालकाय प्रतिमा का अनावरण 10 फरवरी 2019 को बसंत पंचमी उत्सव एवं दीन बंधु चौधरी छोटूराम की 136वीं जयंती समारोह के दौरान महामहिम राज्यपाल, जम्मु काश्मीर माननीय श्री सत्यपाल मलिक द्वारा तत्कालीन केंद्रीय मंत्री चौधरी बीरेंद्र सिंह, केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पीएमओ डा0 जितेंद्र सिंह व जाट सभा के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक डा0 एम एस मलिक, भा0पु0से0 (सेवा निवृत) की उपस्थिति में संपन्न किया गया।

यात्री निवास भवन एक लाख बीस हजार वर्ग फुट में बनाया जाएगा जिसमें फैमिली सुईट सहित 300 कमरे होगें। भवन परिसर में एक मल्टीपर्पज हाल, कांफ्रैंस हाल, डिस्पैंसरी, मैडीकल स्टोर, लाईब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगीं। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके आश्रितों के लिए मुफ्त ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के श्रद्धालुओं के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगीं। यात्री निवास के निर्माण के लिये श्री राम कंवर साहु सुपुत्र श्री पूर्ण सिंह, गांव बीबीपुर जिला जीन्द (हरियाणा), वर्तमान निवासी मकान नं0 110 सुभाष नगर, रोहतक द्वारा 5,11,111/- तथा श्री सुखबीर सिंह नांदल, निवासी मकान नं. 426-427, नेमी सागर कालोनी, वैशाली नगर, जयपुर द्वारा 5,01,000 रुपये तथा श्री देशपाल सिंह निवासी मकान न0 990, सैक्टर-3, कुरूक्षेत्र (हरियाणा) द्वारा 5,00,000 रुपये की राशि जाट सभा, चण्डीगढ को दान स्वरूप प्रदान की गई है।

आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार शीघ्र अनुदान देने की कृपा करें ताकि निर्माण कार्य शीघ्र शुरू किया जा सके जोकि आज सभी के सहयोग से ही संम्भव हो सकेगा। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतू 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा और उसे भवन में आजीवन मुफ्त ठहरने की सुविधा प्रदान की जाएगी। जम्मु काश्मीर के भाई-बहन व दानवीर सज्जन इस संबंध में चौधरी छोटु राम सेवा सदन के अध्यक्ष श्री सर्बजीत सिंह जोहल (मो0नं0 9419181946), श्री भगवान सिंह उप प्रधान (मो0नं0 8082151151) व केयर टेकर श्री मनोज कुमार (मो0नं0 9086618135) पर संपर्क कर सकते हैं। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम जाट सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2-बी, सैक्टर 27-ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर टी जी एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड- एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80-जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)

सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान

साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक

प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो॰ : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो॰ : 9416282798

वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़

फोन : **0172-5086180**

Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला

फोन : 0172–2590870, **Email: jatbhawan6pkl@gmail.com**

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।